प्रिंट मीडिया मे फार्मर फ़र्स्ट परियोजना का कवरेज

राष्ट्रीय कृषि उन्नत मेला में शामिल होने को 80 किसान दिल्ली रवाना

भास्कर न्यूज | पीपरा

राष्ट्रीय कृषि उन्नत मेला का आयोजन आईएआरआई पूसा नई दिल्ली में 16-18 मार्च तक किया गया है। इसमें एक लाख किसान शामिल होंगे। लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर द्वारा संचालित फार्म्स फर्स्ट परियोजना व पटना आईसीआर के तहत मेहसी, चकिया व पीपरा मंडल से लगभग 80 किसान इस राष्ट्रीय मेला में भाग लेने के लिए गुरुवार को बस से रवाना हुए।

इस मेला में 17 मार्च को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश भर से आए किसानों व वैज्ञानिकों को संबोधित करेंगे। इस दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों को सम्मानित किया जाएगा। वहीं, कृषि कर्मण पुरस्कार के तहत राज्यों को 5 करोड़ रुपए, प्रशस्ति पत्र व ट्रॉफी दिया जाएगा। मेले में 800 स्टॉल लगाए जाएंगे।

इस क्रम में जैविक खेती पर खास जोर दिया जाएगा। फार्म्स फर्स्ट की ओर से नेतृत्व कर रहे अजय कुमार चौधरी ने बताया कि यह राष्ट्रीय कृषि उन्नत मेला भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह के नेतृत्व में संपन्न किया जाएगा।

किसानों के बीच मक्का बीज का वितरण

मेहसी. प्रखंड के उझिलपुर गांव में मंगलवार को राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर द्वारा 50 किसानों के बीच मक्का शंकर बीज महाराजा किस्म का वितरण किया गया. वहीं किसानों ने वैज्ञानिकों को नीलगाय से होने वाले नुकसान को बताया. अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ विशालनाथ ने कहा कि किसान सभी तरह के बीज का मूल्यांकन स्वयं करे. क्षेत्र में जो बीज अधिक पैदावार दे उसी का खेती करे. इस मौके पर वरीय वैज्ञानिक संजय कुमार सिंह, किसान रामदयाल सहनी, महावीर राम, शंभु राम, जयपाल राम, मदन सहनी, वकील सहनी सहित अन्य किसान मौजूद थे.

कार्यक्रम. रासायनिक उर्वरकों का करें संतुलित उपयोग

देश में 10 करोड़ किसानों को मिला स्वॉयल हेल्थ कार्ड : मंत्री

➲ धरती मां को बीमार होने से बचाएं किसान

प्रतिनिधि ▷ मोतिहारी

केंद्रीय कृषि सह किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह ने विश्व मृदा दिवस के अवसर पर कहा है कि स्वायल हेल्थ कार्ड योजना का उद्देश्य देश के सभी किसानों की 12 करोड़ जोतों के स्वायल हेल्थ के विषय में जानकारी देना है. कृषि मंत्री ने कहा कि हर वर्ष पांच दिसंबर को विश्व मृदा दिवस मनाया जाता है. इसकी शुरुआत 2015 में राजस्थान में की गयी थी.

कहा कि देश में 10 करोड़ किसानों को स्वायल हेल्थ कार्ड उपलब्ध कराया गया है. साथ ही मिट्टी के स्वास्थ्य व उर्वरता में सुधार करने के लिए उर्वरक की जगह वर्मी इस्तेमाल की सलाह दी गयी है. कार्ड की प्रमुख विशेषताओं में नमूने एकत्र करने एवं प्रयोगशाला में परीक्षण के लिए एक समान दृष्टिकोण अपनाना, 'देश में सारी भूमि को कावर करना और हर दो वर्ष में स्वायल हेल्थ कार्ड जारी करना शामिल है. स्वायल हेल्थ कार्ड 14 स्थानीय भाषा में तैयार किया जा रहा है, जिसे किसानों में वितरीत किया जाता है. उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि स्थानीय बोली में स्वायल हेल्थ कार्ड तैयार करने का काम शुरू हो चुका है. इससे किसानों को ज्यादा लाभ होगा. क्योंकि कार्ड अब अपनी बोली अपनी माटी के तर्ज पर होगा. उक्त आशय की जानकारी श्री सिंह के हवाले से उनके निजी सहायक आशीष रंजन ने दी है.

जिले में 53 सौ किसानों को मिला स्वायल कार्ड : विश्व मृदा दिवस पर मंगलवार को जिला कृषि कार्यालय में कैंप आयोजित कर किसानों के बीच स्वायल हेल्थ कार्ड का वितरण किया

बंद चीनी मिल को चालू कराने के लिए विधानसभा में उठाऊंगा आवाज : विधायक

पीपराकोठी में किसानों को स्वायल कार्ड देते विधायक श्यामबाबू यादव.

पीपराकोठी. जिस प्रकार हम अपने परिवार के सदस्यों की पूरी ख्याल रखते हैं, उसी प्रकार हमें अपने इस धरती का भी ख्याल रखना होगा. आज हम विश्व मृदा दिवस मना रहे हैं. मृदा का परीक्षण करा कर किसानों को उपलब्ध कराना सरकार का मुख्य उद्देश्य है. उक्त बातें स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में आयोजित विश्व मृदा दिवस के अवसर पर आयोजित किसान गोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सह पीपरा विधायक श्याम बाबू प्रसाद यादव ने कही. कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यक्रम समन्वयक डॉ के के झा ने किया. वही कार्यक्रम का उद्घाटन संयुक्त रूप से मुख्य अतिथि विधायक श्री यादव, केवीके के कार्यक्रम समन्वयक डॉक्टर के के झा, डीएओ डॉ ओंकार नाथ सिंह, डीएचओ डॉ श्रीकांत शर्मा ने संयुक्त रूप से किया, जबकि मंच संचालन कृषि वैज्ञानिक डॉ अरविंद कुमार सिंह ने किया. विधायक श्री यादव ने कहा कि बंद चीनी मिल को चालू कराने को लेकर मैं प्रयासरत हूं और इस मुद्दे को भी मैं विधानसभा में भी उठाऊंगा. केविके के द्वारा 17 सौ किसानों के मृदा का परीक्षण कराया गया और उन्हें स्वायल हेल्थ कार्ड दिया गया है. इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने किसानों को स्वायल हेल्थ कार्ड का वितरण किया. मौके पर कृषि वैज्ञानिक डॉ आरबी शर्मा, मुखिया दिवाकर पांडेय, मनोरंजन सिंह, अवधेश सिंह, मणिभूषण शर्मा, सुनील पटेल, साधुशरण सिंह व उप सरपंच रामेश्वर मौजूद थे.

संग्रामपुर. प्रखंड कार्यालय परिसर में विश्व मृदा दिवस मनाया गया. इस दौरान बीडीओ सुनील कुमार ने किसानों के बीच मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया. बीएओ सतीश चंद्रा ने बताया कि 200 मृदा स्वास्थ्य कार्ड जिला से प्राप्त अशोक कुमार मिश्र आदि मौजूद रहे.

बंजरिया. इ. किसान भवन के सभागार में मंगलवार को बीएओ प्रभु राम द्वारा 87 किसानों के बीच मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण मंगलवार को किया गया. मौके पर प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी

गरण मुजफ्फरपुर, 6 दिसंबर 2017 **चकिया/अरेराज/सिकरहना/पकड़ीदयाल जागरण**

किसानों को दिया गया स्वायल हेल्थ कार्ड

विभिन्न प्रखंडों में शिविर लगाकर किसानों को बताया गया स्वायल हेल्थ का महत्व, दी कई जानकारी

50 किसानों के बीच स्वायल हेल्थ कार्ड का किया गया वितरण | **17** पोषक तत्व मिट्टी की उपज के लिए है अनिवार्य

मेहसी में किसान को मृदा हेल्थ कार्ड देते विधायक श्यामबाबू यादव ● जागरण

जेएनएन, मोतिहारी : विश्व मृदा दिवस के अवसर पर कृषि विभाग के तत्वावधान में मंगलवार को किसानों के बीच स्वायल हेल्थ कार्ड का वितरण किया गया। इसके लिए प्रखंडों में शिविर भी लगाए गए। इस दौरान किसानों को हेल्थ कार्ड के महत्व के बारे में विशेषज्ञों द्वारा जानकारी दी गई। वहीं रसायनिक खाद की जगह जैविक खाद के प्रयोग पर बल दिया गया। जिले में कुल 5379 किसानों को हेल्थ कार्ड दिया गया। जिला कृषि कार्यालय परिसर में भी हेल्थ कार्ड का वितरण किया गया। मौके पर संयुक्त निदेशक सुरेंद्र कुमार, जिले के नोडल पदाधिकारी विभू विद्यार्थी सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

मेहसी : विधायक श्यामबाबू यादव ने कहा कि मिट्टी जब तक मजबूत एवं स्वस्थ नहीं होगी, हमें उसका उचित लाभ नहीं मिलेगा। मिट्टी में जैविक, भौतिक एवं रसायनिक गुणों का होना आवश्यक है। शीघ्र ही हम उस मुकाम पर होंगे किसानों की स्थिति बेहतर होगी। वे मंगलवार को मेहसी के दामोदरपुर में विश्व मृदा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने 50 किसानों के बीच स्वायल हेल्थ कार्ड का वितरण किया। वहीं, राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के निदेशक विशाल नाथ ने मिट्टी के अनिवार्य गुणों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि मिट्टी के उपज के लिए 17 पोषक तत्व अनिवार्य है। मौके पर भाजपा नेता गोपाल सिंह, उमेश शर्मा, कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार, प्रभात कुमार, शंभू राम, अजय कुमार, आलोक राज, सोनू कुमार सिंह, रामदयाल सहनी, गोपाल सिंह, गोविंद मिश्रा, महेश सिंह, नरेश मिश्र, सुरेंद्र सिंह, वीरेंद्र साह, रघुवंश राम, रघुवीर सहनी, चंद्रदेव राम, प्रभु मिश्र, रघुवंश राम आदि मौजूद थे।

पीपराकोठी : विश्व मृदा दिवस के अवसर पर आयोजित किसान गोष्ठी में पीपरा विधायक श्याम बाबू प्रसाद यादव ने कहा कि हम अपने परिवार के सदस्यों का ख्याल रखते हैं। उसी प्रकार हमें अपनी धरती का भी ख्याल रखना होगा। हम जो कुछ भी खाते हैं वह इस मिट्टी से ही जुड़ा हुआ है। मृदा का परीक्षण कराकर किसानों को उपलब्ध कराना सरकार का मुख्य उद्देश्य है, ताकि किसान आवश्यकतानुसार अपने खेतों में उचित मात्रा में उर्वरक का प्रयोग कर सकें। कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक एवं केवीके के कार्यक्रम समन्वयक डॉक्टर केके झा, डीएओ डॉ ओंकार नाथ सिंह, डीएचओ डॉ. श्रीकांत शर्मा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया है। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. झा ने कहा कि किसानों से जुड़ी सभी समस्याओं के समाधान के लिए यहां कृषि वैज्ञानिक उपलब्ध हैं। इनके द्वारा आधुनिक खेती के गुर सिखाए जाते हैं। केविके के द्वारा 17 सौ किसानों के मृदा का परीक्षण कराया गया और उन्हें स्वायल हेल्थ कार्ड दिया गया है। मौके पर वैज्ञानिक डॉ. अरविंद कुमार, डॉ. आरबी शर्मा, मुखिया दिवाकर पांडेय, उप सरपंच रामेश्वर यादव आदि मौजूद थे।

फेनहारा : प्रखंड मुख्यालय के सभागार में मंगलवार को प्रखंड कृषि पदाधिकारी रामनिवास प्रसाद की अध्यक्षता में मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण समारोह का आयोजन कर किसानों के बीच मृदा कार्ड का वितरण जिला पार्षद आकाश गुप्ता द्वारा किया गया। मौके पर मुखिया सतीन्द्र राम, वशिष्ठ यादव, जितेन्द्र राय, एससी आलोक कुमार, निखिल बिहारी, आनंद कुमार, संजय कुमार, पप्पू कुमार, बसंत कुमार, अशोक कुमार आदि मौजूद थे।

अरेराज : ई किसान भवन के सभागार में मंगलवार को उपप्रमुख ललन सिंह की अध्यक्षता में 375 स्वायल हेल्थ कार्ड का वितरण किया गया। मौके पर बीडीओ अमित कुमार पांडेय, बीएओ राजबिहारी, सुरेंद्र राय, रामबली सिंह, विनोद तिवारी, युसूफ राय, कृषि समन्वयक राजेश पांडेय, गिरीश तिवारी, निर्भय शुक्ला, संजय मिश्रा, अशोक कुमार आदि उपस्थित थे।

बंजरिया : प्रखंड के किसानों के बीच मंगलवार को 87 मृदा कार्ड का वितरण किया गया। उक्त जानकारी देते हुए बीएओ प्रभु राम ने बताया कि इससे पूर्व किसानों के मिट्टी की जांच की गई। मौके पर सभी कृषि समन्वयक मौजूद थे।

तेतरिया : प्रखंड के पुनास गांव में कृषि संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें कृषि वैज्ञानिक विवेकानंद गुप्ता और नवीन कुमार ने किसानों को उन्नत तरीके से खेती के तौर-तरीके बताए। मौके पर अखिलेश कुमार, विनोद कुमार निषाद, गणेश कुमार, राधा किशन प्रसाद, मंजू देवी, अनीता कुमारी, राजेंद्र प्रसाद आदि मौजूद थे।

तुरकौलिया : प्रखंड परिसर स्थित ई किसान भवन में मृदा दिवस के अवसर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सेमिनार का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न पंचायतों से आए किसानों के बीच मृदा हेल्थ कार्ड का वितरण किया गया। मौके पर कृषि समन्वयक अरविंद कुमार, संजीव कुमार सिंह, विनोद कुमार, राजेश कुमार वर्मा, अपूर्व कुमार मिश्रा, अशोक कुमार सिंह, सुनील कुमार, अखिलेश कुमार सिंह, राजेश कुमार नागर, विपीन बिहारी, जीतेंद्र कुमार सिंह आदि उपस्थित थे।

तकनीक अपनाने से ही बढ़ेगी आमदनी: मंत्री

चकिया /बाराचकिया | एसं / निसं

किसान कृषि की विकसित तकनीक को अपनाकर ही आमदनी बढ़ा सकते हैं जिससे वे खुशहाल और सम्पन्न होंगे। उक्त बातें बिहार सरकार के पर्यटन मंत्री प्रमोद कुमार ने शनिवार को चकिया के एक होटल में फार्मर्स फर्स्ट परियोजना द्वारा आयोजित किसान संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कही।

कल्याणपुर विधायक सचिन्द्र प्रसाद सिंह ने मेहसी में नये कृषि विज्ञान केंद्र खोलने की जानकारी लोगों को दी। परियोजना समन्वयक डॉ संजय कुमार सिंह ने मशरूम प्रशिक्षण, आचार का प्रशिक्षण, बटेर व मुर्गी पालन से लाभ की जानकारी दी। कृषि उन्नति मेला 2018, जो भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में आयोजन किया गया है, का भाषण व जीवंत प्रसारण दिखाया गया। सभा को कृषि संस्थान पटना के वैज्ञानिक डॉ अनिल कुमार सिंह, डॉ पंकज कुमार, बिहार पशु चिकित्सा विवि, पटना के वैज्ञानिक डॉ पंकज कुमार, लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ शेषधर पांडे, डॉ विनोद कुमार आदि ने संबोधित किया।

केंद्रीय मंत्री ने किया सब्जी बीज का वितरण

मेहसी. केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह के निधि से राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर द्वारा बुधवार को उझिलपुर व दामोदरपुर के 80 किसानों के बीच गरमा सब्जी बीज का वितरण किया गया. लीची अनुसंधान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार सिंह ने बताया कि वितरित की गयी भिंडी काशी क्रांति, लौकी काशी गंगा, कोहड़ा काशी हरित व लोबिया काशी निधि है. इसका उत्पादन स्थानीय किस्म से ज्यादा है. बीज को राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा विकसित किया गया है व प्रजनन भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी द्वारा किया गया है. मौके पर भाजपा नेता अजय कुमार सिंह, अवधेश यादव, प्रोजेक्ट सहायक शम्भू राम, किसान रामदयाल सहनी, रघुवीर सहनी, सुकदेव सहनी सहित अनेक किसान थे.

दैनिक भास्कर

पपीता की खेती से किसानों को होगी अतिरिक्त आमदनी

पूसा डवार्फ पपीता के पौधे का किया गया वितरण

किसानों के बीच पपीता के पौधे का वितरण करते कृषि वैज्ञानिक।

भास्कर न्यूज | मेहसी

पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री सह स्थानीय सांसद राधामोहन सिंह की देखरेख में चल रहे फार्मर्स फर्स्ट परियोजना अंतर्गत शनिवार को मेहसी प्रखंड के 50 किसानों के बीच पपीता की पूसा डवार्फ किस्म का वितरण किया गया। किसानों को सलाह दी गई कि इस पौधे को 6 वर्ग फीट की दूरी पर या तो एकल फसल या आम व लीची में अंतः फसल के रुप में लगाए। फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक व राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी मुजफ्फरपुर के वरीय वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने बताया कि पौधा लगाने के पश्चात प्रति वर्ष आधा किलो यूरिया एवं 400 ग्राम पोटाश दें। यूरिया 100 ग्राम दो माह के अंतराल पर दें तथा पोटाश साल में जुलाई व फरवरी में दें। अभी के लगाए हुए पौधे में नवंबर में फूल आने लगेंगे एवं फरवरी मार्च में फल मिलने लगेगा।

इस पौधे को एक बार लगाने से तीन बार फल ले सकते हैं। पपीता का पौधा किसानों को अतिरिक्त आमदनी का बेहतर जरिया बन सकता है। लाभुक किसानों में बखरी नाजीर गांव के कपिलदेव सहनी, रामेश्वर ठाकुर, विंदेश्वरी साह, पवन सहनी, दामोदरपुर गांव के विकाश मिश्रा, कौशल सिंह, गजेंद्र मिश्र, कांति मिश्र,रिपुराज, सुरेंद्र सिंह सहित कई किसान शामिल थे।

किसानों को मिले उन्नत किस्म के पपीता के पौधे

मेहसी में किसानों के बीच पौधा वितरण करते वैज्ञानिक • जागरण

मेहसी, संस : राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर द्वारा फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के तहत कृषि के क्षेत्र में किसानों को जागरूक करने का प्रयास जा रही है। इस परियोजना के तहत अनुसंधान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक संजय कुमार सिंह के निर्देशन में मेहसी प्रखंड में जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस क्रम में उन्नत किस्म के पपीता के पौधे किसानों को उपलब्ध कराए गए। मेहसी व चकिया के करीब एक दर्जन गांवों में आइसीएआर लखनऊ द्वारा उपलब्ध कराए गए उन्नत किस्म के फलदार पौधों का वितरण किया गया है। अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. विशालनाथ व केंद्र के प्रधान अन्वेषक सह प्रधान वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से कहा कि इन विविधता वाले किस्मों को किसान अपनी बागवानी में लगाकर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने किसानों को ऐसे पौधों को लगाकर अधिक आमदनी प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया। इस क्रम में पपीता के साथ आम के आम्रपाली, मल्लिका, अरुणिका, दशहरी, लंगड़ा, मालदह, अमरूद के सरदार, ललित, स्वेता, धवल के उन्नत किस्म के पौधे किसानों के बीच वितरित किए गए। प्रदर्शन हेतु जामुन के जे-37 व 42, नागपुरी संतरा, आंवला व कागजी नींबू के पौधे किसानों के बीच वितरित किए गए। वैज्ञानिको ने मेहसी के दामोदरपुर के मशरूम किसान विकास कुमार मिश्रा के मशरूम उत्पादन प्लांट का निरीक्षण किया। उनकी व्यवस्था से वे प्रभावित नजर आए।

किसानों के बीच पपीता के पौधे का वितरण

मेहसी, संस : फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के तहत राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर ने केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह के निर्देश पर मेहसी एवं पीपरा प्रखंड के कई गांवों में उन्नत किस्म के पपीता के 18 सौ पौधों का वितरण किया। इस क्रम में मेहसी प्रखंड के उझिलपुर, दामोदरपुर, बखरी नाजीर व पिपरा प्रखंड के लाला टोला के करीब पांच सौ से अधिक किसान लाभान्वित हुए। वितरण के दौरान अनुसंधान केंद्र के विरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ आरके पाटिल ने किसानों को पौधरोपण तथा उसके संरक्षण पर विस्तार से जानकारी दी। मौके पर भाजपा जिला किसान मोर्चा के महामंत्री अजय सिंह, पंचायत समिति सदस्य बीरेंद्र यादव, ओमप्रकाश यादव, विनोद ठाकुर सहित कई किसान मौजूद थे।

किसानों के बीच पौध वितरण करते अधिकारी • जागरण

दैनिक भास्कर | 05-Aug-2019 Page 2

कुमारी, कैलाश देवी, उषा देवी आदि भी थी। कमियों में पुरानी ट्रेजरी में राधाकृष्णन उपस्थित थे। कराया जाएगा। जाएगा। जिस तरह से हमा

कार्यक्रम • मुजफ्फरपुर के राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी की ओर से चलाया जा रहा अभियान

कृषि वैज्ञानिक ने मेहसी के किसानों के बीच आम्रपाली, लंगड़ा मल्लिका, दशहरी, अंबिका आदि आम के पौधे वितरित किए

भास्कर न्यूज | मेहसी

पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह की देखरेख में चल रहे फार्म फस्ट परियोजना अंतर्गत राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर की ओर से नींबू, आंवला, अमरूद, संतरा के पौधों का वितरण मेहसी प्रखंड के उझीलपुर, बखरीनाजिर, दामोदरपुर गांव में किया गया।

उच्च गुणवत्ता के पौधे केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ से मंगाई गई थी। जिसमें आम की छह किस्में आम्रपाली, मल्लिका, दशहरी, लंगड़ा, अंबिका, अरुणिका तथा अमरुद की चार किस्में सरदार, ललित, स्वेता तथा धवल किस्म का भी वितरण परियोजना के प्रधान अन्वेषक एवं अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वरीय वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार सिंह ने किया।

किसानों के बीच पौधा वितरित करते कृषि वैज्ञानिक।

जामुन के जे-7 एवं जे-42 किस्म का किया प्रदर्शन

इस परियोजना के अंतर्गत जामुन के जे 7 एवं जे 42 किस्म को प्रदर्शन के लिए किसानों को दिया गया। प्रयोग के तौर पर नागपुरी संतरा के 50 पौधे कुछ चुनिंदा किसानों को उपलब्ध कराए गया। आंवला के पौधे भी परीक्षण हेतु चार किसानों के बाग में लगाए गए। कृषि वैज्ञानिक डा. संजय कुमार सिंह ने कहा कि किसानों के बगीचे में आम के कुछ ही किस्म के पौधे हैं। अमरुद की स्थानीय किस्म लगाने के कारण फल काफी छोटा होता है। कृषि वैज्ञानिक ने कहा कि विविधता वाले बाग की स्थापना में उझीलपुर के चंद्रदेव राम, शंभू राम, विशंभरपुर के राजेश कुमार मिश्रा, मोहब्बत छपरा के संजय कुमार एवं दामोदरपुर के कौशल सिंह काफी रुचि ले रहे हैं। उझीलपुर में 50, दामोदरपुर में 25 तथा बखरी नाजिर के 50 किसानों के बीज पौधों का वितरण किया गया। लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डा. विशाल नाथ ने कहा कि किसान विविधता वाली किस्म लगाएं। मौके पर किसान संजय कुमार, हर्षित हर्ष, राजेश कुमार मिश्र, अजय कुमार सिंह, विनोद ठाकुर भी थे।

लीची के बगीचे में मधुमक्खी का बक्सा रखना है फायदेमंद

मेहसी. लीची में मंजर आना शुरू हो गया है. किसान लीची के बगीचा व आसपास मधुमक्खी का बक्सा अवश्य रखें. क्योंकि मधुमक्खी पर-परागण के सबसे अच्छे संवाहक होते हैं. पर-परागण नहीं होने से दाना कमजोर व अपुष्ट हो जाता है.

उक्त बातें गुरुवार को उझीलपुर में लीची उत्पादक किसानों को संबोधित करते हुए लीची अनुसंधान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक डॉ एसके सिन्हा ने कही. उन्होंने बताया कि प्रति हेक्टेयर लीची बाग में 10 से 12 मधुमक्खी का बक्सा रखना फायदेमंद है. इस दौरान राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी मुजफ्फरपुर द्वारा कार्यान्वित फार्मर फर्स्ट परियोजना अंतर्गत केंद्र के वरीय वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक डॉ आलेमवाती पोंगिनर एवं एक्सेल क्रॉप केयर इंडिया लिमिटेड के विनय यादव और विपिन सिंह द्वारा मेहसी के मिर्जापुर के आम व लीची के बाग तथा उझिलपुर में सब्जी की फसलों का निरीक्षण किया और किसानों को आवश्यक सुझाव दिए. इस दौरान वहां के किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाली सब्जी के बीज वितरण किया. इस मौके पर फार्मर फर्स्ट परियोजना कर्मी शंभु राम, भाजपा नेता अजय सिंह मौजूद थे.

किसानों को सब्जी का बीज देते वरीय वैज्ञानिक संजय कुमार सिंह.

प्रभात खबर
Fri, 28 February 2020
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/49453189

मशरूम उत्पादन के लिए मौसम है सबसे अनुकूल, कम समय में होगा अधिक मुनाफा

भास्कर न्यूज | मेहसी

मेहसी में आयोजित मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण में उपस्थित लोग।

फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत बटन मशरूम के उन्नत उत्पादन तकनीक पर सजीव प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन मेहसी दामोदरपुर में बुधवार को किया गया। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डॉक्टर विशाल नाथ के निर्देशानुसार इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में दामोदरपुर, उझीलरपुर, बखरी नाजिर एवं रंगरेज छपरा के 50 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान महिला किसानों ने बटन मशरूम के उत्पादन हेतु खाद बनाने की विधि, स्पाअन की बीजाई उपरांत देखरेख के बारे में जानकारी प्राप्त की। मशरूम उत्पादन केंद्र राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ दयाराम ने बटन मशरूम के उत्पादन तकनीक पर विस्तृत जानकारी किसानों को दी।

उन्होंने मशरूम उत्पादन से कम समय में ज्यादा आमदनी के साधन के रूप में किसानों को लेने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि बटन मशरूम के लिए कम से कम 15 से 22 डिग्री सेल्सियस तापमान चाहिए। जिसके लिए अभी का समय सार्वाधिक उपयुक्त है। फार्मर फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ संजय कुमार सिंह ने किसानों को मशरूम उत्पादन तकनीक को बताते हुए कहा कि इससे किसान काफी अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। कहा कि इस वर्ष भी यहां के कुछ किसानों ने जो ओयस्टर मशरूम की अच्छी उत्पादन किया है। जिसका प्रशिक्षण फरवरी 18 में राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर द्वारा किया गया था। इससे प्रोत्साहित होकर बटन मशरूम पर भी जोर दिया जा रहा है। मशरूम के विचरण की समस्याओं पर चर्चा की गई। मौके पर प्रोजेक्ट के क्षेत्र सहायक शंभू राम ने प्रोजेक्ट में चल रहे विभिन्न कार्यों की जानकारी दी। कार्यक्रम में किसान दिलीप सिंह, ओम प्रकाश कुमार मिश्रा, शैलेश मिश्रा, विकास कुमार, चंदन राम, रेणु देवी, निर्मला देवी सहित कई किसानों ने भाग लिया।

दैनिक भास्कर

किसानों के बीच वैज्ञानिकों ने बांटा मशरूम का बीज

भास्कर न्यूज | मेहसी

मेहसी के दामोदरपुर व बखरी नाजीर के चार किसानों को बटन मशरूम के उत्पादन हेतु कंपोस्ट व बटन मशरूम का बीज मुजफ्फरपुर स्थित राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र द्वारा दिया गया। लाभुक किसानों में मिंटू कुमार, धर्मेंद्र ठाकुर, शिवमंगल राम, गौरीशंकर कुमार थे। इन किसानों को सुझाव देते हुए फॉर्मर फर्स्ट परियोजना अन्वेषक डा. संजय कुमार सिंह ने कहा कि किसान एक क्विंटल कंपोस्ट से 15 से 20 किलो तक बटन मशरूम का उत्पादन कर सकते है। इसमें मात्र 1500 रुपए की लागत आएगी। किसानों को पोलीप्रोपिलीन के बैग भी दिए गए। पिछ्ले सप्ताह राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम वैज्ञानिक डॉ. दयाराम तथा लीची अनुसंधान के वैज्ञानिकों ने दामोदरपुर के विकासशील मशरूम उत्पादक विकास मिश्रा के यहां बटन मशरूम उत्पादन हेतु प्रशिक्षण दिया था। विकास मिश्रा ने मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में एक पहचान बना ली है। इससे पहले लीची अनुसंधान के वरीय वैज्ञानिक डॉक्टर संजय कुमार सिंह ने बतख पालन के हेतु प्रोत्साहित किये गए बखरी नाजिर के दीनानाथ सहनी, माया देवी, राजकुमारी देवी, करन सहनी, रामचन्द्र राय के बत्तखों की जानकारी ली। किसानों ने गेहूं, मसूर व सरसो के उन्नत बीज की जानकारी ली।

दैनिक भास्कर | 21-Oct-2019 Page 2

कार्यक्रम • मेहसी के दामोदरपुर में वैज्ञानिकों ने मक्का फसल लगे खेत का किया निरीक्षण

मशरूम के लिए खाद बनाने का हुआ प्रशिक्षण, खेतों में पहुंच किसानों को कीटों से बचाव की दी जानकारी

भास्कर न्यूज | मेहसी

मेहसी के दामोदरपुर में जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक।

मेहसी के दामोदरपुर में कृषि वैज्ञानिकों ने मक्का फसल लगे क्षेत्र का निरीक्षण कर आर्मी वर्म पर कीटनाशक की जानकारी किसानों को दी। वहीं मेहसी दामोदरपुर स्थित लालेश्वर मशरूम उत्पादन केंद्र पर मशरूम के खाद बनाने का प्रशिक्षण दिया।

वैज्ञानिकों ने बताया कि 5 एमएल क्लोपाइरोफोस प्रति किलो बीज से सीड ट्रीटमेंट करें। शीड ट्रीटमेंट शाम में करने के बाद सुबह में इसकी बिजाई करें। वैज्ञानिकों ने कहा कि आर्मी कीट गेहूं, मक्का की फसल को चट कर जाता है। इसका नाम ही आर्मी वर्म है, जो फौज की तरह झुंड में चलता है। इसका निदान सही कीटनाशक है। वैज्ञानिकों ने कहा कि 95% कीटनाशक मिलावटी होने के कारण कीड़ों का नियंत्रण नहीं हो पाता है। इसके लिए सही कीटनाशक का चयन आवश्यक है। वही ऐसी फसलें जो खराब हो गई है हो, उन्हें खेतों में साफ कर मिट्टी से दबा देने की सलाह दी। मौके पर पंतनगर विश्वविद्यालय के पूर्व कीट विज्ञान विभागाध्यक्ष डा. जीसी सचन, लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के कीट वैज्ञानिक डा. कुलदीप श्रीवास्तव, फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक डा.संजय कुमार सिंह, इंदौर से कृषि स्नातक कर मशरूम का प्रशिक्षण ले रहे अमित पाटीदार, किसान कौशल सिंह, रितुराज, गौरी शंकर कुमार, धर्मेंद्र ठाकुर, मंटू कुमार, श्री प्रकाश उपाध्याय, प्रेम प्रकाश उपाध्याय आदि मौजूद थे।

फ़ड़ीदयाल जागरण www.jagran.com

मशरूम की खेती बेहतर रोजगार

मेहसी में मशरूम विशेषज्ञ के समक्ष खाद तैयार करते किसान • जागरण

मेहसी, संस : मशरूम की तरह उसके खाद को बनाकर भी रोजगार का सृजन किया जा सकता है। बाजार में मशरूम की ऊपज को लेकर उसके खाद की भी मांग बहुतायत मात्रा में है। पूर्वी चंपारण में मेहसी के साथ-साथ कई प्रखंडो में बड़े पैमाने पर मशरूम की खेती की जा रही है। प्रति मशरूम बैग चार से पांच किलो खाद मशरूम के बीज लिए आवश्यकता पड़ती है। इसका उत्पादन एक बेहतर रोजगार का जरिया बन सकता है। उपरोक्त बातें राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मशरूम विशेषज्ञ डॉ. दयाराम ने कही। वे रविवार को मशरूम के प्रगतिशील किसान विकास कुमार मिश्रा के लालेश्वर मशरूम उत्पादन केंद्र दामोदरपुर मेहसी पर पाइप विधि से खाद निर्माण का प्रशिक्षण दे रहे थे। उन्होंने इस उत्पादन को छोटे किसानों के लिए लाभकारी बताते हुए कहा कि 15 से 17 दिनों के भीतर इस विधि से बेहतर गुणवत्ता युक्त खाद का निर्माण किया जा सकता है। इस बीच पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व किट विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ जी सी सचान, राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर के किट वैज्ञानिक डॉ कुलदीप श्रीवास्तव, फार्मर फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ संजय कुमार सिंह व इंदौर से कृषि स्नातक कर पूसा में मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण ले रहे इंदौर निवासी अमित पाटीदार ने संयुक्त रूप से मक्के व सब्जियों पर फौज के झुंड में हमला बोलने वाले आर्मी वर्म से प्रभावित खेतों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि वह कीट जहां भी हमला कर रहा है फसल को चट कर जा रहा है। जिससे किसान परेशान हैं। उन्होंने बचाव को लेकर क्लोरोपारिफॉस से बीजोपचार कर बुआई करने के साथ साथ खराब फसल को साफ कर मिट्टी में दबाने की सलाह देते हुए कहा कि अभी बचाव के लिए इसका एक मात्र उपाय यहीं है। वैज्ञानिकों ने बाजारू दवाओं में 95 प्रतिशत मिलावट रहने की बात प्रमाणित करते हुए किसानों को प्रमाणिक कीटनाशक दवा उपयोग करने की सलाह दी। मौके पर पहाड़पुर शिवमंगल राम, धर्मेंद्र ठाकुर, गौरी शंकर कुमार, मिंटू कुमार, प्रकाश उपाध्याय, प्रेम प्रकाश उपाध्याव, अभिषेक कुमार तिवारी, दामोदरपुर के रिपुराज कुमार, कौशल सिंह ने खाद उत्पादन का प्रशिक्षण लिया।

उन्नत खेती के लिए दिया प्रशिक्षण

मेहसी में महिला किसानों को मशरूम की खेती का सजीव प्रशिक्षण देते प्रशिक्षक ● जागरण

मेहसी, संस. : केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह के निर्देश पर फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के तहत दामोदरपुर में राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर एवं राजेंद्र केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर के तत्वावधान में बुधवार को किसानों को मशरूम के उन्नत उत्पादन तकनीक पर आधारित सजीव प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में दामोदरपुर, उझिलपुर, रंगरेज छपरा आदि गांवों के करीब 50 किसानों ने भाग लिया। इनमें महिलाओं की संख्या सर्वाधिक थी। प्रशिक्षण के दौरान एक दर्जन महिलाओं ने बटन मशरूम के उत्पादन हेतु खाद बनाने तथा देख-रेख की जानकारी हासिल की। राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मशरूम विभाग के प्राध्यापक डॉ. दयाराम ने कहा कि मशरूम कम समय मे उत्पादन देकर ज्यादा आमदनी का साधन बन सकता है। जाड़े का समय इसके लिए उपयुक्त है। उन्होंने खाद बनाने की तकनीक व बीजारोपण पर भी विस्तार से चर्चा की। फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ संजय कुमार सिंह ने किसानों को मशरूम उत्पादन तकनीक को पेशा के रूप में अपनाने की सलाह दी। बताया- इस वर्ष 15 से 20 किसानों ने आयस्टर मशरूम की बेहतर खेती की है। मशरूम के करीब 20 हजार से अधिक प्रजाति हैं। जिनमें से आयोस्टर, बटन, दूधिया, पींडिस्टरा, सियाके, मकिडेड, मिटाके, फुडईएर, मुच्छी मशरूम, कीड़ाजड़ी सहित 20 प्रजातियों पर शोध जारी है। मौके पर प्रोजेक्ट के प्रक्षेत्र सहायक शंभू राम, प्रमुख मशरूम उत्पादक विकास कुमार, दिलीप सिंह, ओमप्रकाश कुमार मिश्रा, शैलेश मिश्रा आदि मौजूद थे।

संविधान बचाओ न्याय यात्रा की तैयारी को लेकर हुई बैठक ,बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं के पहुंचने की

दैनिक भास्कर

किसानों के बीच मक्का के उन्नत बीज का हुआ वितरण

मेहसी के उझीलपुर गांव में किसानों को बीज देते कृषि वैज्ञानिक।

भास्कर न्यूज | मेहसी

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर द्वारा कार्यान्वित फार्मस फर्स्ट परियोजना अंतर्गत मक्का का संकर बीज महाराजा के किस्म का वितरण मूल्यांकन हेतु मेहसी प्रखंड के उझीलपुर गांव के 50 किसानों के बीच बीज का वितरण किया गया। फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक एवं लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वरीय वैज्ञानिक डा.संजय कुमार सिंह ने कुछ मक्के के प्रक्षेत्र का भ्रमण भी किया। उन्होंने उझीलपुर के किसान भानु प्रताप के मक्का के सघन खेती का अवलोकन किया। जिसमें मोनसेंटो के बीज 9081 लगाया गया था। राष्ट्रीय लीची अनुसन्धान केंद्र के निदेशक डा. विशाल नाथ ने निर्देश दिया कि किसान सभी तरह के बीजों का स्वयं मूल्यांकन करें तथा इस क्षेत्र में जिसकी पैदावार अच्छी हो उसे आगे बढ़ाएं।

गांव में परिचर्चा • मोहब्बत छपरा में कृषि वैज्ञानिकों ने उन्नत बागवानी को लेकर किसानों को दिए महत्वपूर्ण टिप्स

बाग में पौधों की ऊंचाई के नियंत्रण के लिए बीच की डालियों को काट कर हटा दें : डॉ. श्रीवास्तव

भास्कर न्यूज | मेहसी

मेहसी में बाग का निरीक्षण कर समस्याओं का उपाय बताते वैज्ञानिक।

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी के वैज्ञानिकों ने फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत आम व लीची के पुराने बाग में जाकर उसके जीर्णोद्धार की जानकारी मोहब्वत छपरा गांव में परिचर्या के दौरान किसानों को दी। किसानों के बीच चर्चा करते हुए केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. घनश्याम पांडेय ने कहा कि पुराने बागों का जीर्णोद्धार का समय दिसंबर माह में है। किसानों की डाई बैक एवं पौधों को सूखने की समस्या में अंतर बताई टहनियों को काटने के बाद बोर्डो मिक्सचर 5 ग्राम चुना के साथ 5 ग्राम तूतिया को आधा लीटर पानी में घोलकर इसका पेस्ट लगाने व सूख रहे पौधों को जड़ों में 2 ग्राम प्रति लीटर बेविस्टिन का जड़ में प्रयोग करने की सलाह दी गई।

आम के बाग में भुनगा की समस्या के लिए थिअक्लोप्रीड का छिड़काव 5 मिली एक लीटर पानी मे मिलाकर करने को कहा गया। भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के कीट वैज्ञानिक डा. कुलदीप श्रीवास्तव ने कहा कि बाग में साफ सफाई रखे। बाग में पौधों की ऊंचाई के नियंत्रण हेतु बीच की डाली को काट कर हटाने से बाग में प्रकाश की व्यवस्था कर सकते हैं। वैज्ञानिकों ने मोहब्वत छपरा के प्रगतिशील किसान संजय कुमार के आम एवं अमरूद के बाग का भ्रमण किया। किसानों को सलाह दी गयी कि अमरूद के बाग 6 मीटर 3 मीटर पर ही लगाए। लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वरीय वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने कहा कि सभी तरह के बाग में सुखी टहनियों पत्ते को अविलंब हटाए तथा कटे भाग पर ब्लाइटोक्स का लेप लगाएं। निंबू के पौधों में वाटर शकर को तुरंत काट कर निकाल दे। किसानों को कहा गया कि लीची के बाग में जिंक सल्फेट 2 ग्राम प्रति लीटर पानी मे मिलाकर छिड़काव करने से अधिक मादा फूल आएगा। कई किसानों ने लीची में फल बेधक किट, आम में फल बेधक व फल मक्खी के नियंत्रण के बारे में पूछा। मौके पर मनोज साह, महग साह, अवधेश कुमार यादव, मिश्रीलाल साह, सकवी खां, शिवचंद्र प्रसाद, शंभु राम आदि शामिल थे।

जल जीवन हरियाली की बैठक में अनुपस्थित कर्मियों पर कार्रवाई के लिए बीडीओ को पत्र

- बंजरिया प्रखंड के सिसवा पूर्वी और अजगरी गांव में बैठक आयोजित
- मानव शृंखला में शत प्रतिशत सहयोग करने की अपील की गई

भास्कर न्यूज | बंजरिया

बंजरिया के सिसवा पश्चिमी में बैठक करते जनप्रतिनधि।

प्रखंड के सिसवा पश्चिमी, सिसवा पूर्वी व अजगरी में गुरुवार को जल जीवन हरियाली योजना को लेकर जनप्रतिनिधियों की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता पंचायत की मुखिया माया देवी, तान्या परवीन व आस्मिता सिंह ने की। सिसवा पश्चिमी पंचायत की मुखिया माया देवी ने बैठक में नहीं आने वाले राजस्व कर्मचारी, राजकीय मध्य विद्यालय आमवा, एनपीएस बिनटोली, एनपीएस तुरहा टोली, एनपीएस एससी टोला के शिक्षक व सेविकाओं के विरुद्ध कार्रवाई के लिए बीडीओ को लिखा है। मुखिया ने सभी जनप्रतिनिधियों से आगामी 19 जनवरी को बनने वाली मानव शृंखला में शत प्रतिशत सहयोग करने की अपील की। सभी लोगों को अपने स्तर से मानव शृंखला में एक कड़ी के रूप में जुड़ने को कहा। बैठक में नंदलाल साह, शिवजी प्रसाद, जफीर आजाद चमन, फैजुर्रहमान, भारत भूषण, रितेश कुमार, बीरदेव महतो, जयकिशोर बैठा, लालमुनि देवी, पुष्पा देवी, रीता देवी, अनिला देवी, रामनाथ महतो, कमल मुखिया, सरोज देवी, तारा देवी, शत्रुघ्न कुमार, सहरुल अंसारी, बीसीओ मुनींद्र कुमार, पंचायत सचिव भीमराय व सभी वार्ड सदस्य मौजूद थे।

दैनिक भास्कर | 13-Apr-2018
मोतीहारी Page 2

कार्यक्रम | आम व लीची उत्पादक किसानों को वैज्ञानिकों ने उत्तम बागवानी का दिया प्रशिक्षण

आम-लीची में उर्वरक प्रबंधन, फल फटने से रोकना एवं इथरेल से आम को पकाने की दी गई जानकारी

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

मेहसी प्रखंड के कोठिया हरिराम पंचायत के कनकटी में गुरुवार को राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी, मुजफ्फरपुर द्वारा 'मेरा गांव मेरा गौरव' अंतर्गत प्रक्षेत्र दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में गांव के आम एवं लीची के किसानों को एकीकृत स्वास्थ्य प्रबंधन पर वैज्ञानिकों के द्वारा उन्नत तकनीकों की जानकारी दी गई। सभा को संबोधित करते हुए केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने आम और लीची में उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई प्रबंधन, फल गिरना,फल फटने से रोकना एवं इथरेल द्वारा आम को पकाने की प्रक्रिया की जानकारी दी गई। लीची अनुसंधान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार ने आम एवं लीची के बाग में कीट एवं रोग प्रबंधन नए रसायनों से कैसे करें की जानकारी दी।

उन्होंने शुन्य बजट पर प्राकृतिक कृषि की भी विस्तृत जानकारी किसानों को दी। डॉ. कुमार ने ट्राइकोडरमा का प्रयोग कर नए पौधे को मरने की रोकथाम के गुण बताए। सभा को संबोधित करते हुए वैज्ञानिक डॉ. स्वाति शर्मा ने आम एवं लीची से संस्कृत पदार्थ बनाने के तरीकों के बारे में बताया। प्रगतिशील किसान गणेश प्रसाद कुशवाहा ने कहा कि लीची एवं आम के बागवानों हेतु कैलेंडर बनाया जाए एवं प्रति दो-तीन महीनों पर कृषि की नई तकनीक की जानकारी किसानों को दी जाए। उन्होंने बाजार में नकली व मिलावटी मिलावटी कृषि रसायनों की उपलब्धता पर चिंता जाहिर की। सभा में ध्रुव प्रसाद कुशवाहा ने किसान सहकारिता बनाने के लाभ के बारे में उपस्थित लोगों को बताया। मौके पर शिवबालक राम, किशोरचंद कुमार, रमाकांत प्रसाद, राजा कुमार,शक्ति कुमार, महेश भगत, योगेंद्र राम, हरिमोहन भगत, श्यामनंदन भगत, राकेश कुमार, मोतीलाल प्रसाद, सुरेश भगत सहित कई किसान उपस्थित थे।

मेहसी में बागवानी का प्रशिक्षण लेते आम व लीची उत्पादक किसान।

दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि मेला सह कृषि वैज्ञानिक वार्ता की शुरुआत आज

मोतिहारी | जिले में आज से तीन दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि मेला सह कृषक वैज्ञानिक वार्ता का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम 13 से 15 अप्रैल तक चलेगा। इस कार्यक्रम में कृषि से जुड़ी प्रदर्शनियों का आयोजन भारत सरकार के विभिन्न संस्थानों के द्वारा किया जाएगा। इसमें देशभर के वैज्ञानिक शामिल होंगे। कार्यक्रम का उद्घाटन भारत सरकार के कृषि व किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह करेंगे। इस कार्यक्रम में पूर्वी चंपारण व आस पास के क्षेत्रों से लगभग पांच हजार कृषकों के प्रतिदिन भाग लेने की संभावना है।

कार्यक्रम में केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान मुंबई के द्वारा मत्स्य पालन व प्रबंधन पर गोष्ठी,राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के द्वारा बागवानी पर गोष्ठी,भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर द्वारा दलहन उत्पादन पर गोष्ठी, राष्ट्रीय मशरूम अनुसंधान केंद्र सोलन हिमाचलप्रदेश द्वारा मशरूम उत्पादन व प्रसंस्करण पर गोष्ठी, कुक्कट अनुसंधान निदेशालय हैदराबाद के द्वारा कुक्कट पालन पर गोष्ठी, केला अनुसंधान केंद्र तिरुचिरापल्ली कर्नाटक के द्वारा केला उत्पादन पर गोष्ठी, राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान द्वारा प्याज व लहसुन उत्पादन पर गोष्ठी,भरतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के द्वारा सब्जी उत्पादन पर गोष्ठी,भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ व राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान कटक के द्वारा गन्ना व धान उत्पादन पर गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

जबकि, तीनों दिन बिहार सरकार के पर्यटन मंत्रालय के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। समापन समारोह का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पटना व अटारी के द्वारा किया जाएगा। इसकी जानकारी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के निदेशक भगवती प्रसाद भट्ट ने दी।

आम व लीची के बेहतर उत्पादन के दिए टिप्स

मेहसी, संस : लीची व आम में मंजर आने लगे हैं तो किसानों को अभी से ही बेहतर फसल के लिए मेहनत करनी होगी। लीची किसान नीम का तेल चार मिली लीटर प्रति लीटर पानी मे मिलाकर छिड़काव कर सकते हैं। फिर मार्च के अंतिम सप्ताह में आम व लीची पर इमिडाक्लोप्रीड 5 मिलीलीटर 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव कर सकते हैं। जिससे आम का भुनगा एवं लीची के फल बेधक की रोकथाम शुरूआती दौर में ही हो जाए। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी मुजफ्फरपुर द्वारा कार्यान्वित फार्मर फर्स्ट परियोजना अंतर्गत केंद्र के वरीय वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक डॉ. आलेमवाती पोंगेनर एवं एक्सेल क्रॉप केयर इंडिया लिमिटेड के विनय यादव और विपिन सिंह द्वारा मेहसी के मिर्जापुर में आम व लीची के बाग तथा उझिलपुर में सब्जी की फसलों का निरीक्षण के दौरान सलाह दी गई। वैज्ञानिकों ने मोहब्बत छपरा के किसान संजय कुमार, श्रीबाबू साहब मिश्रा एवं मोहब्बत छपरा के योगेश पाठक से बात करते हुए किसानों को सुझाव दिया कि अभी लीची में मंजर आने लगे हैं तो मधुमक्खी के बक्से का प्रयोग 10 से 12 की संख्या प्रति हेक्टेयर के हिसाब से लीची के बागों में रख सकते हैं। इस क्रम में वैज्ञानिकों ने उन्नत नस्ल की लौकी, करेला, भिंडी, नेनुआ, झिगनी का बीज 20 किसानों के बीच वितरित किया। लाभुक किसानों में शंभू राम, सोनू राम, रामेश्वर पासवान, जयकिशुन राम, विनीता देवी, दिनेश पासवान, किशोर राम, जयनारायन सहनी आदि शामिल थे। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. विशाल नाथ ने मार्च के अंतिम पखवारा में रोग एवं कीट प्रबंधन पर संगोष्ठी आयोजित करने की घोषणा की। फार्मर फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक एवं केंद्र के वरीय वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने भी आवश्यक टिप्स दिए।

दैनिक भास्कर | 25-Aug-2019
Page 4

मुजफ्फरपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने आम एवं लीची के उल्टा-सूखा रोग से ग्रसित बागों का निरीक्षण किया, किसानों को दिया कीटनाशक के छिड़काव की सलाह

सूखी डाली को काट दें, कटे भाग पर कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का लेप लगाएं

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

पूर्व केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह के निर्देशन में चल रहे फार्मस फर्स्ट परियोजना अंतर्गत शनिवार को राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर के वरीय वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने आम एवं लीची के उल्टा-सूखा रोग से ग्रसित बागों का निरीक्षण किया। उन्होंने मेहसी प्रखंड के मोहब्बत छपरा निवासी संजय कुमार, संजय गुप्ता आदि बागों में जाकर पेड़ों को देखा व बताया कि अभी तत्काल सूखी एवं रोगग्रस्त डाली को काटकर हटा दें तथा कॉपर ऑक्सिक्लोराइड तीन मिलीमीटर प्रति लीटर पानी से कटे भाग पर लेप लगाएं। उन्होंने कहा कि अगर संभव हो तो पेड़ की जड़ को कार्बनडाईजिम एक मिली लीटर से भिगोए।

डा. संजय सिंह ने हाल ही में आम,अमरूद एवं पपीता के पौधे जो कि नए बाग की स्थापना के लिए वितरित किया था। उसका अवलोकन भी किया। उन्होंने पौधों में दीमक के प्रकोप रोकने हेतु 50 ग्राम प्रति गड्ढा क्लोरोपायरीफास का चूर्ण देने की सलाह दी। फार्मस फर्स्ट परियोजना अंतर्गत राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डॉ. विशाल नाथ के निर्देशन पर मेहसी प्रखंड के बखरी नाजिर गांव के करीब 50 किसान, दामोदरपुर के 5 किसानों के बीच मक्का का शंकर बीज महाराजा किस्म एवं अरहर की पूसा-9 किस्म का मूल्यांकन हेतु वितरित किया गया। उन्होंने कहा कि अरहर की नई किस्म के खेती की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी एवं खाली खेत का प्रयोग अभी किसान कर सकते हैं। लाभुक किसानों में बखरीनाजिर गांव के दीपक कुमार, लक्ष्मण राम, राम लाल दास, मिंटू राम, उपेंद्र सहनी, दामोदरपुर गांव के सोनू कुमार सिंह, गणेश सिंह, रिपुराज, मनीष कुमार,कमलेश सिंह आदि शामिल थे।

पौधा को देख कीटनाशक डालने की सलाह देते कृषि वैज्ञानिक।

किसान गोष्ठी में जानकारी देते कंपनी के अधिकारी।

रासायनिक खाद का उपयोग नहीं करने की सलाह

पकड़ीदयाल | चैता पंचायत के छपरा बिहारी गांव में शीतल वाटिका ऑर्गेनिक कंपनी ने किसान गोष्ठी आयोजित कर किसानों को ऑर्गेनिक खेती के बारे बताया। कंपनी के निदेशक फिरोज खान ने किसानों को बताया कि प्रधानमंत्री का सपना जहर मुक्त खेती हो। रासायनिक खादों से खेती की उर्वरा शक्ति नष्ट होती जा रही है। हानिकारक रासायनिक दवाओं के प्रयोग से उपजे फसल भी हानिकारक हो गए हैं। जिससे लोग अनेक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। उन्होंने आने वाले समय में कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से बचने की सलाह दी। पंचायत समन्वयक मधुरंजन कुमार ने किसानों के बीच ऑर्गेनिक दवाओं को मुफ्त वितरण किया। मौके पर पूर्व सरपंच बंशलाल ठाकुर, प्रेमचंद्र ठाकुर, मनोज राम, रामप्रवेश बैठा, लाल बहादुर सिंह, बबन सिंह, भरत सिंह, खेदु राय आदि उपस्थित थे।

किसानों को दी गई उन्नत तकनीक की जानकारी

मेहसी, संवाद सहयोगी : 'मेरा गांव मेरा गौरव' कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के तत्वावधान में मेहसी की कोठिया हरेराम पंचायत स्थित कनकटी गांव में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिकों ने कृषि कार्य के उन्नत तकनीक की जानकारी दी। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने कहा कि कृषि क्षेत्र में उन्नत तकनीक को अपना कर हम खुद अपनी तकदीर लिख सकते हैं। उन्होंने आम एवं लीची में उर्वरक व सिंचाई प्रबंधन, फलों को गिरने से रोकने एवं इथराल द्वारा फलों को पकाने की विधि पर विस्तार से जानकारी दी।

वैज्ञानिक विनोद कुमार ने बागों में किट एवं रोग प्रबंधन, नए रसायनों का प्रयोग, शून्य बजट पर प्राकृतिक कृषि की जानकारी दी। वहीं, डॉ. स्वाति शर्मा ने आम एवं लीची से प्रसंस्कृत पदार्थों को बनाने के तरीकों पर चर्चा की। प्रगतिशील किसान गणेश कुशवाहा ने बागवानी हेतु कैलेंडर जारी करने तथा प्रत्येक तीन माह पर नए तरीकों की जानकारी देने की मांग की। कार्यक्रम की अध्यक्षता गणेश कुशवाहा व संचालन वैज्ञानिक संजय कुमार ने किया। मौके पर ध्रुव कुशवाहा, सुरेश प्रसाद, रमाकांत प्रसाद, डॉ. ईश्वर चंद, श्यामनंदन प्रसाद, शंभू राम, वैद्यनाथ राय आदि ने भी अपने विचार व समस्याओं को रखा।

किसानों को संबोधित करते अतिथि • जागरण

कृषि क्षेत्र में उन्नत तकनीक को अपना कर हम खुद अपनी तकदीर लिख सकते है : वैज्ञानिक

दैनिक भास्कर
17-May-2018
मोतीहारी Page 3

आयोजन | लीची कीट स्टिंग बग के निदान के लिए कार्यशाला का आयोजन, कृषि वैज्ञानिकों ने बताए उपाय

लीची के फटने की समस्या से निदान के दिए टिप्स

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

मेहसी प्रखंड के मिर्जापुर स्थित लीची बाग में बुधवार को लीची के फलों पर स्टिंग बग के प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी, मुजफ्फरपुर के द्वारा किया गया। संयोजक की भूमिका में जिला उद्यान कार्यालय मोतिहारी के सह निदेशक डॉक्टर श्रीकांत ने किसानों की समस्या को गंभीरता पूर्वक सुना व किसानों के लिए उपयोगी दवा को मेहसी के बाजारों में उपलब्धता के लिए उपाय करने का आश्वासन दिया। लीची अनुसंधान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉक्टर कुलदीप श्रीवास्तव ने मोनोसिल को आम एवं लीची के बाग में नहीं छिड़कने की जानकारी किसानों को दी। कीट स्टिंग बग पर वैज्ञानिकों ने विस्तृत चर्चा करते हुए निदान के उपाय बताएं। लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ विनोद कुमार ने आम एवं लीची में रोग प्रबंधन की जानकारी दी। केंद्र के वरीय वैज्ञानिक डॉक्टर संजय कुमार सिंह ने आम एवं लीची फल के फटने की समस्या, फल गिरने की समस्या एवं खाद व उर्वरक प्रबंधन पर किसानों को जरूरी उपाय बताएं। सभा में फार्मर फर्स्ट के वरिष्ठ आलोक राज, परिक्षेत्र सहायक शंभू राम, प्रगतिशील किसान गणेश कुशवाहा, अजय कुमार सिंह, संजय कुमार लड्डू, लतीपुर रहमान, शाहिद रजा, हामिद रजा, त्रिभुवन प्रसाद, लालबाबू प्रसाद,मकसूद आलम सहित दर्जनों किसानों ने भाग लिया।कार्यक्रम में किसानों की प्रमुख समस्या में लीची फल का झुलसना फलों का गिरना, फटना एवं संस्तुत दवा का क्षेत्रीय बाजार में अनुपलब्धता बताई गई।

मेहसी के मिर्जापुर में आयोजित कार्यशाला में उपस्थित किसान।

फलों के कीट से बचाव के उपाय बताए

कार्यशाला में बिना संस्तुत किए गए दवा का छिड़काव, ज्यादा छिड़काव होने की वजह से कीट का नियंत्रण नहीं होना इसका कारण बताया गया। कृषि कीट वैज्ञानिक ने लीची के बाग में फल के बड़ी इलायची साइज के हो जाने पर किसी भी कीट के नियंत्रण हेतू नीम के तेल को 10 दिन के अंतराल पर तीन छिड़काव करने की सलाह दी। उन्होंने बताया की लीची में लगा स्टिंग बग कीट कुसुम के पौधों से माइग्रेशन होकर यहां पहुंचा है। कहा कि छिड़काव करने के बाद मछुआ कीट के नियंत्रण हेतू पॉलीथिन के सिट से तना को लपेटने का सुझाव देते हुए किसानों को बताया कि पॉलीथिन के दोनों सिरों पर ग्रीस का प्रयोग करें तथा गिरे हुए फल को गड्ढे में गाड़ दें।

दैनिक भास्कर
2
P

मेहसी के घरियारीचक में हुआ कार्यक्रम, गार्डलिंग को बताया अनिवार्य

वैज्ञानिकों ने किसानों को सिखाए लीची के पौधों में हर साल फल आने के गुर

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

मेहसी के घरियारिचक स्थित लीची के बाग में राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वैज्ञानिकों ने किसानों को लीची के पौधों में हर साल फल आने के गुर सिखाए। वैज्ञानिकों ने बताया कि लीची के पौधों में गार्डलिंग करने से हर साल फल आने लगते हैं।

गार्डलिंग सितंबर के अंतिम सप्ताह या अक्टूबर के पहले सप्ताह में कर सकते हैं। प्रशिक्षणकर्ता राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर के प्रधान वैज्ञानिक डा. अमरेंद्र कुमार ने कहा कि गार्डलिंग करने से लीची में नई पत्तियां नहीं निकलेगी तथा हर साल फल आएगा। फार्मस फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक सह वरीय वैज्ञानिक डा. संजय कुमार सिंह ने कहा कि गार्डलिंग के किट कुछ किसानों को इसी सप्ताह दी जाएगी। लाभुक किसानों में मोहब्बत छपरा के संजय कुमार, घरियारीचक के अरुण कुमार, हरिनाथ मिश्रा, शिवचंद्र चौरसिया, अशोक कुमार, जियाउर रहमान, राजेंद्र राम, रितुराज आदि मौजूद थे।

मेहसी में किसानों को जानकारी देते वैज्ञानिक।

पौधों में सूखा रोग होने पर टहनी को काट कर हटा दें

मेहसी, संस : यही वक्त है जब किसानों को आम लीची के पौधों के स्वास्थ की देखभाल करनी होगी। पौधों में लगे रोगों का उपचार करना होगा। उपरोक्त बातें राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार सिंह ने मेहसी में सुखा रोग से ग्रसित बागों के निरीक्षण के दौरान कही। उन्होंने मोहब्बत छपरा स्थित संजय कुमार व संजय कुमार गुप्ता के बागों का निरीक्षण किया। कहा कि सूखा रोग ग्रसित पौधों से डाली को शीघ्र काट कर हटा दें। साथ ही कटे भाग पर प्रति लीटर पानी मे 03 मिली लीटर कॉपर आक्सिक्लोराइड का लेप लगाएं। जड़ को कार्बेंडाजिक के घोल से भिंगोए। अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ विशालनाथ के निर्देश पर प्रदर्शन हेतु उन्नत किस्म के अरहर व मक्के के बीज का वितरण चकिया व मेहसी के 95 किसानों के बीच किया। जिसमे संजय कुमार, लक्ष्मण राम, रामलाल दास, संजय गुप्ता, मिंटू राम, उपेंद्र सहनी, दीपक कुमार, महेश सहनी, ललन सहनी, सचिन्द्र सहनी, सोनू कुमार आदि शामिल हैं।

चकिया/अरेराज/सिकरहना/पकड़ीदयाल जागरण
मुजफ्फरपुर, 10 जनवरी

किसान अपने बगीचे को भी रखें स्वच्छ और सुरक्षित : वैज्ञानिक

मेहसी, संस : बागों को स्वच्छ व सुरक्षित रखना है तो किसानों को जागरूक होना होगा। आम या लीची के पौधों को सूखने से बचाने के लिए उपचार जरूरी है। इसकी टहनियों को काटने के बाद बोर्डो मिक्चर का पेस्ट लगाकर उस पर नियंत्रण किया जा सकता है। इसके साथ सूख रहे पौधों की जड़ों में दो ग्राम वेबिस्टिन का प्रयोग भी जरूरी है, ताकि सूखने पर काबू पाया जा सके। उक्त बातें केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान रहमनखेरा लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ घनश्याम पांडेय ने कही। वे प्रखंड के मोहब्बत छपरा गांव में राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी मुजफ्फरपुर द्वारा चलाई जा रही फार्मर फर्स्ट परियोजना अंतर्गत आम व लीची के पुराने बाग में जीर्णोद्धार एवं दैहिक विकार पर किसानों के साथ परिचर्चा कर रहे थे। उन्होंने किसानों को डाई बैक एवं पौधों को सूखने की समस्या में अंतर बताते हुए कहा कि इस समय बागों में कई तरह की समस्या उत्पन्न हो सकती है। इसके लिए किसानों को स्वयं सजग होना होगा। भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के कीट वैज्ञानिक डॉ कुलदीप श्रीवास्तव ने कहा कि जिस प्रकार हम अपने घरों की सफाई करते है, बागों को भी हमसे यही अपेक्षा रहती है। ज्यादा घने बाग भी पौधों को प्रभावित करते है। इस बीच मोहब्बत छपरा के संजय कुमार ने अपने आम एवं अमरूद के बाग का भ्रमण करवाया। लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वरीय वैज्ञानिक एवं फार्मर फर्स्ट परियोजना के प्रधान अंवेषक डॉ संजय कुमार सिंह ने कहा कि सभी तरह के बाग में सूखी टहनियों, पत्ते को अविलंब हटाया जाना चाहिए। किसान वैज्ञानिक वार्तालाप में मनोज साह, महग साह, अवधेश कुमार यादव, मिश्रीलाल साह, सकबी खां, शिवचंद्र प्रसाद, संजय प्रसाद, शंभू राम आदि शामिल थे।

मेहसी में बाग का निरीक्षण करते बाएं से दूसरे उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. घनश्याम पांडेय, दाएं भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के किट वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव व राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह • जागरण

खेती-किसानी

- आम व लीची के पौधों को सूखने से बचाने के लिए उपचार जरूरी
- टहनियों को काटने के बाद बोर्डो मिक्चर का पेस्ट लगाने की सलाह

वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में बहुफसली खेती पर दिया बल

पीपरा, संस : भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के वैज्ञानिक डॉ कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि किसान गोभी के फसल में तीन लाइन पर एक लाइन सरसों का पौधा लगा डायमंड बैक मोथ के प्रकोप को कम कर सकते है।

वे गुरुवार को चकिया प्रखंड के चिंतामनपुर गांव में किसानों को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। वहीं फार्मरफस्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक डा संजय कुमार सिंह ने किसानों को एकल फसल की जगह बहुफसली खेती पर बल दिया। मौके पर प्रदीप कुमार, नागेंद्र कुमार सहनी, नवीन कुमार, भूलन सहनी, बीरबल सहनी, मुन्नी देवी, चंपा देवी आदि किसान उपस्थित थे।

गार्डलिंग करने से हर साल फलेगी लीची : प्रधान वैज्ञानिक

मेहसी. गार्डलिंग करने से प्रत्येक वर्ष लीची फलेगी. उक्त बातें लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ अमरेंद्र कुमार बुधवार को घरियारी चक स्थित एक लीची बगान में किसानों को संबोधित करते हुए कही. इस दौरान उन्होंने लीची पेड़ पर गार्डलिंग कर किसानों को दिखाया. वरीय वैज्ञानिक संजय कुमार सिंह ने कहा कि पूर्व कृषि मंत्री राधामोहन सिंह द्वारा इस क्षेत्र के किसानों के विकास के लिए फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य किसानों के नियमित आय को दुगुना करना है. किसान लीची बाग का समेकित प्रबंधन करते हुए लीची बाग में गार्डलिंग करवाते हैं, तो किसानों को सुनिश्चित फल लगने से निश्चित आय हो जाएगी. परियोजना के तहत चिह्नित लीची उत्पादक किसान को गार्डलिंग कीट दी जाएगी. मौके पर परियोजना सहायक आलोक राज, शम्भू राम, किसान संजय कुमार, अजय कुमार सिंह, अरुण राय, अशोक कुमार सहित अनेक किसान थे.

प्रभात खबर
Thu, 26 Septe
https://epape

दैनिक भास्कर
13-May-2018
मोतीहारी Page 2

खेती-किसानी | किसानों ने कृषि सह कल्याण विकास मंत्री से भी लगाई थी समस्या के समाधान की गुहार

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मेहसी में 16 मई को करेगा कार्यशाला, किसानों को मिलेंगे कीट से बचाव के टिप्स

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

मेहसी में साढ़े 11 हजार हेक्टेयर में लगी लीची फसल में लगी कीट, 100 करोड़ की लीची हो सकती है बर्बाद। पांच हजार उत्पादकों के समक्ष संकट शीर्षक के साथ दैनिक भास्कर ने इस खबर को प्रमुखता के साथ शनिवार को प्रकाशित किया। इस खबर पर राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर ने संज्ञान लेते हुए मेहसी में 16 मई को लीची उत्पादकों के लिए कार्यशाला आयोजित करने की बात कही है। कार्यशाला लीचीपुरम उत्सव समिति के सौजन्य से आयोजित होगी। इसमें राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक भाग लेंगे। वे लीची उत्पादकों को इस कीट से बचाव के गुर सिखाएंगे।

कीटों के कारण प्रभावित हो रहा है लीची उत्पादन

लीचीपुरम उत्सव समिति के महासचिव सुदिष्ट नारायण ठाकुर ने गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इन कीटों के कारण लीची उत्पादन पर ग्रहण लगा हुआ है तथा समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं ढूंढा गया तो किसानों की कमर टूटना निश्चित है। उन्होंने बताया कि जिला पौध सहित कृषि विज्ञान केंद्र पीपराकोठी सहित केंद्रीय कृषि सह कल्याण विकास मंत्री को इस समस्या की जानकारी देते हुए अविलंब निदान की गुहार लगाई गई है। उन्होंने बताया कि लीचीपुरम उत्सव समिति पिछले 11 वर्षों से लीची किसानों के बेहतरी के लिए प्रयास कर रही है।

झारखंड से इस क्षेत्र में पहुंचा है कीट

भास्कर से बातचीत में राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. विशाल नाथ ने बताया कि दैनिक भास्कर के माध्यम से उन्हें किसानों के इस समस्या का पता चला है। उन्होंने कहा कि यह कीट झारखंड के जंगलों से इस क्षेत्र में पहुंचा है तथा एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक फैल रहा है। इसके निदान के लिए किसान सघन रूप से पेड़ों को स्प्रे करें। जिन पेड़ों पर इस तरह के कीट नहीं लगे हैं उनपर भी यह छिड़काव जरूरी है। उन्होंने बताया कि किसान एक लीटर में 1.5 एमएल ट्राईगो फास्ट (घातक), एक लीटर पानी में .5 एमएल कराटे व एक लीटर पानी में .3 एमएल रसायन का मिश्रण कर पेड़ों को अच्छी तरह से छिड़काव करें। इससे इन कीटो का पूरी तरह सफाया हो जायेगा। तथा जिन पेड़ों तक अभी ये कीट नहीं पहुंचे हैं उनका फल सुरक्षित रह सकेगा।

16 को लीची कार्यशाला का होगा आयोजन

मेहसी | निज संवाददाता

लीची के फल में लग रही बीमारी एवं कीट के प्रकोप से बचाव के लिए तिरहुत उच्च विद्यालय के प्रांगण में 16 मई को कार्यशाला का आयोजन किया गया है।

जिसमें लीची अनुसन्धान केंद्र मुजफ्फरपुर व कृषि अनुसंधान केंद्र पिपरा के कृषि वैज्ञानिक कीट से बचाव तथा इसके उपचार पर किसानों को जानकारी देंगे। उक्त जानकारी लीची पुरम उत्सव समिति के अध्यक्ष सुधीर कुमार सिन्हा ने रविवार को हुई बैठक में जानकारी दी है।उन्होंने कहा कि इस वर्ष लीची की फसल अच्छी नहीं है इसके बाद जो फसल आया भी है उसमें बीमारी तथा कीट का प्रकोप दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है, जिससे काफी नुकसान होने की आशंका है । समय रहते इस का निदान नहीं हुआ तो करोड़ों का नुकसान होगा। वहीं लीचीपुरम उत्सव समिति के सचिव सुदिष्ट नारायण ठाकुर ने बताया कि 11वीं लीचीपुरम उत्सव राजकीय तिरहुत उच्च विद्यालय के प्रांगण में 26 मई से 28 मई तक चलेगी। मौके पर शिक्षक सचिन्द्र राम सफी अहमद, शम्भू राम, अली इमाम कुरैसी, मुखिया सत्येन्द्र सिंह आदि थे।

लीची के मंजर को चट कर जा रहा स्टिक बंग कीट

मेहसी, संस : लीची के मंजर पर पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी लाल रंग के अज्ञात कीटों के हमलों ने किसानों के हौसले पस्त कर दिए हैं। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने पिछले वर्ष इस कीट को स्टिक बंग नाम देते हुए मंजर व फसलों के बचाव के लेकर निरोधात्मक कदम उठाए थे। हालांकि इस पर पूर्णरूपेण काबू तो पाया नहीं जा सका था लेकिन इसका फैलाव रुक गया था। लेकिन इस बार कीटों के फैलाव को देखते हुए यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि अगर तुरंत इस पर काबू नहीं पाया गया तो कई बाग फसल लगने से पहले ही चट हो जाएंगे। इसके प्रकोप को देखकर किसान व व्यवसायी सहमे नजर आने लगे है। लाल रंग का यह किट अभी तक मिर्जापुर और आस पास के क्षेत्रों के लीची फलने वाले करीब 10 प्रतिशत डंठलों को चट कर चुका है। अब तक कृषि विभाग या लीची अनुसंधान केंद्र ने इससे बचाव का कोई ठोस कदम नही उठाया है। जबकि यहां के किसानों के लिए लीची जीविकोपार्जन का मुख्य साधन है। किसान लतिफुर, शाहिद राजा, इमाम हसन कुरैशी, अबुल कलाम आजाद, मुखिया सतेंद्र सिंह, संजय सिंह, भगवान सिंह, सुरेंद्र प्रसाद कुशवाहा, नईमुल हक, रिज़वान अहमद सहित दर्जनों किसानों ने बताया कि पिछले दो वर्षों से इस कीट से किसान परेशान है। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी ने रोकथाम के उपाय किये थे, लेकिन वह कारगर साबित नही हुआ। इस कीट पर आज तक पूर्णरूपेण काबू नही पाया जा सका है। इसका प्रकोप लीची का सीजन आरम्भ होते ही शुरु हो जाता है। किसानों ने किट के इस प्रकोप को आपदा घोषित कर मुआवजे की घोषणा सरकार से करने की मांग की है। यहां बता दें कि मेहसी देश का सबसे बड़ा लीची उत्पादक क्षेत्र है। करीब साढ़े ग्यारह हेक्टेयर में यहां लीची के बागों का फैलाव है। अगर फसल अच्छी रही तो प्रतिवर्ष करीब सौ करोड़ से अधिक का कारोबार होता है। इस व्यवसाय से हजारों मजदूरों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त होते है।

मेहसी के मिर्जापुर में लीची बगान में लीची के मंजर पर लगे अज्ञात लाल कीट • जागरण

मंजर पूरी तरह खिल गए हों तो कोई छिड़काव न करें

डॉ. संजय कुमार सिंह, वरीय वैज्ञानिक राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर सह फॉर्मर फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक ने कहा कि अभी लीची के बाग मे पूरी तरह से फूल नही खिले है। इस तरह के बाग मे अभी तुरंत थियाक्लोप्रिड (0.4 मिली लिटर), लम्ब्डा-साइहैलोथ्रिन (0.3 मिली लीटर), एवं स्टिकर (0.3 मिली लीटर) को एक लीटर पानी मे मिलकर छिड़काव करें कई बाग मे एक ही बार छिड़काव करने से निजात मिल जाएगी। छिड़काव के दौरान पौधे को पूरी तरह से भिगो दें। गिरे हुए कीड़ों को मिट्टी मे तुरंत दबा दें जिससे पुनः पेड़ पर चढ़ न सके। हमेशा छिड़काव ऊपर से नीचे की तरफ करें नहीं तो नीचे से छिड़काव करने से कीड़े ऊपर की ओर चले जाएंगे। अगर मंजर पूरी तरह से खिल गए हों तो कोई छिड़काव न करें। पेड़ को हिलाने से भी कुछ कीड़े गिर सकते हैं।

वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमारसिंह • जागरण

और बड़ी संख्या में शिक्षकों और गैर- किया गया. भाजपा किसान मोर्चा के अतिथियों ने बाबा साहेब की जीवनी आधुनिक भारत का निर्माता बताते हुये कि अंबेडकर संपूर्ण भारत के ऐसे सहित अन्य ने माल्यार्पण किया.

लीची में स्टिंक बग के कीड़े से बचाव के बारे में बताया

- किसानों के लिए वैज्ञानिकों ने जारी किया हेल्पलाइन नंबर

वरीय संवाददाता ▷ मोतिहारी

प्रभात खबर इम्पैक्ट

विश्व स्तर पर चर्चित मुजफ्फरपुर की लीची में स्टिंक बग कीट के प्रकोप को देखते हुए वैज्ञानिकों की टीम रविवार को मेहसी पहुंची. इस दौरान मुजफ्फरपुर लीची अनुसंधान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ कुलदीप श्रीवास्तव, डॉ संजय सिंह, डॉ दया राम आदि ने मिर्जापुर व उझीलपुर के इलाकों में दवा का छिड़काव कर किसानों को कीड़े से निजात के लिए कई सुझाव दिये. वैज्ञानिकों ने कहा कि पेड़ के सभी शाखाओं को छिड़काव कर भीगो दें. छिड़काव पेड़ के ऊपरी भाग से होना चाहिए. अगर नीचे से छिड़काव होता है, तो कीड़े ऊपर चले जाते हैं. छिड़काव वैसे सभी पेड़ों पर करें, जिसमें फल लगे हो या नहीं लगे हो. अंतराल दस दिनों का होना चाहिए. छोटे कीड़े छिड़काव के साथ पेड़ से नीचे गिर जाते हैं, जिन्हें मिट्टी के अंदर दबा दे. इधर निदेशक डॉ विशालनाथ ने वैज्ञानिकों को लीची प्रभावित इलाके में प्रति सप्ताह भ्रमण करने का निर्देश दिया है. उन्होंने कहा कि किसानों को फल में कीड़ा संबंधी कोई भी समस्या हो, तो मोबाइल नंबर 7541073388 पर संपर्क कर सकते हैं. वैज्ञानिकों ने बताया कि फसल को बचाने के लिए पौधे को हिलाकर बग कीड़े को नीचे गिरा मिट्टी में दबा दे. साथ ही ट्राइजोफास 1.5 मिमी, थियाक्लोप्रीड 0.5 मिमी व स्टीकर 0.3 मिमी प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें. वैज्ञानिकों के पहुंचने से किसानों में उम्मीद की किरण जगी है. यहां बता दें कि प्रभात खबर ने स्टिंक बग कीट के लीची के प्रकोप से संबंधित खबर 14 अप्रैल के पेज पांच पर प्रमुखता से छापा है. खबर छपने के बाद संज्ञान लेते हुए वैज्ञानिकों की टीम मेहसी पहुंची थी.

कुछ इलाका में पिछले वर्ष भी हुआ था प्रकोप

शाही लीची में स्टिंक बग कीट का खतरा

14 तारीख के अंक में छपी खबर की कटिंग.

महिला किसानों को दिया गया मशरूम का प्रशिक्षण

पीपरा. विशुनपुरा पंचायत के दामोदरपुर में रविवार को मशरूम के प्रसंस्करण पर 40 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया. प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर द्वारा फॉर्मर फर्स्ट परियोजना अंतर्गत दूधी मशरूम, ढिंगरी मशरूम खेती के तौर तरीके बताये गये. इस दौरान मशरूम से पकौड़ी बनाने के तरीका का सदृश्य प्रदर्शन किया गया. प्रशिक्षण में मौजूद राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मशरूम वैज्ञानिक डॉक्टर दयाराम तथा फार्मर फर्स्ट और योजना के प्रधान डॉक्टर संजय कुमार सिंह ने प्रशिक्षण ले रहे महिलाओं की रुचि पर प्रसन्नता जाहिर की. इस मौके पर किसानों में रूबी देवी, प्रमिला देवी, फूलमती देवी, प्रेमा कुंवर, राधा कुंवर, मैना देवी, अमरावती कुंवर, मीना देवी, मोहरी देवी, गायत्री देवी सहित दर्जनों महिला किसान मौजूद थीं.

दैनिक भास्कर | 16-May-2018 मोतिहारी Page 3

कार्यशाला | लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी, मुजफ्फरपुर की ओर से किसानों के लिए मेहसी के मिर्जापुर के बगीचे में कार्यशाला का आयोजन

किसानों को स्टिंग बग के साथ लीची एवं आम के प्रबंधन पर दी जाएगी जानकारी, दवाओं का भी होगा प्रदर्शन

भास्कर न्यूज | मेहसी

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर संजय कुमार सिंह, जिला उद्यान पदाधिकारी डॉ श्रीकांत ने मंगलवार को मेहसी के मिर्जापुर के कुछ मुख्य लीची बगीचों का भ्रमण किया।

इस दौरान उन्होंने लीची किसानों को लीची के फल पर लगे स्टिंग बग कीट के प्रकोप से बचाव के कुछ जरूरी उपाय सुझाए। बगीचे में काफी मात्रा में लीची के अर्धपक्व फल पाए गए, जो कि इसकी कीट के द्वारा नुकसान किए गए थे। कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर संजय कुमार सिंह ने बताया कि बुधवार 16 मई को लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी मुजफ्फरपुर के द्वारा लीची किसानों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन मेहसी के मिर्जापुर के बगीचे में किया जा रहा है। इसमें सहसंयोजक जिला उद्यान कार्यालय मोतिहारी भी है।

उन्होंने बताया, केंद्रीय कृषि मंत्री सह किसान कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह के सख्त निर्देश पर आज हम लोगों ने मेहसी में बगीचों का भ्रमण किया तथा बुधवार को लीची किसानों के लिए कार्यशाला का आयोजन है। कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर संजय कुमार सिंह ने कहा कि कार्यशाला में दो तरीके के दवाओं का सजीव प्रदर्शन भी किया जाएगा। किसानों को स्टिंग बग के प्रबंधन के साथ-साथ लीची एवं आम के अन्य कीट एवं रोग प्रबंधन पर जानकारी दी जाएगी।

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के तीन वैज्ञानिकों के साथ-साथ प्रखंड कृषि कार्यालय के कर्मचारी भी कार्यशाला में उपस्थित होंगे। मौके पर किसान मकसूद आलम, अजय कुमार सिंह, लतीफउर रहमान, शाहिद रजा, जियाउर रहमान, अबैदुर रहमान, शंभू राम, खलीलउर रहमान, मसलाउ आलम, अख्तर अंसारी, एहसान अली आदि किसान थे।

लीची को देखते कृषि वैज्ञानिक।

स्टिक बग नामक कीटों का लीची बगान पर हमला, अलर्ट जारी

लीची बागान में पहुंचे राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने लिया जायजा

- वैज्ञानिकों ने क्षेत्रीय सहायक शंभू राम के माध्यम से छिड़काव किया
- आपातस्थिति से निबटने के लिए मोबाइल पर फोन करने को कहा

मेहसी, संस : स्टिक बग नामक कीटों का एक बार फिर लीची के बागों पर हमला हो चुका है। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने किसानों लिए अलर्ट जारी किया है। कहा है कि अगर किसान इस किट से फसल के बचाव को लेकर जागरूक नहीं हुए तो उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। इसके लिए समय रहते किसानों को जागरूक होने की सलाह वैज्ञानिकों ने दी है। फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. विशालनाथ के निर्देश पर वरीय वैज्ञानिक डॉ.कुलदीप श्रीवास्तव व डॉ संजय सिंह ने संयुक्त रूप से पूर्व से प्रभावित मिर्जापुर व उझिलपुर क्षेत्र में लगे लीची के बागों का निरीक्षण किया। कई बागों में स्टिक बग नामक कीटों का प्रभाव देखा गया।

इस दौरान उन्होंने मौके पर उपस्थित किसान हामिद रजा, मकसूद आलम, अजय सिंह व सादिक अंसारी को बागों को कीटों से बचाव हेतु शीघ्र सुरक्षात्मक कदम उठाने की सलाह दी। वैज्ञानिकों ने क्षेत्रीय सहायक शंभू राम के माध्यम से छिड़काव का तकनीकी प्रदर्शन भी किया। अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक ने मोनोसिल व प्रोटीनेक्स नामक रसायन के पौधों पर छिड़काव को प्रभावहीन बताते हुए कहा कि यह रसायन इन कीटों पर प्रभावी नहीं है। अगर इन कीटों से लीची के मंजर या फलों को बचाना है तो किसान पहले पौधों को हिलाकर स्टिक नामक कीटों को नीचे गिरा लें। इससे प्रौढ़ किट नीचे गिर जाएंगे। गिरे कीटों को एकत्रित कर जमीन के अंदर दबा दें। साथ ही ट्राइजोफास 1.5 मिलीलीटर, थियाक्लोप्रीड 0.5 मिली व स्टिकर 0.3 मिली को प्रतिलीटर पानी में घोल तैयार कर छिड़काव करें। छिड़काव के दौरान पेड़ की सभी शाखाओं को पूरी तरह रसायन से भीगो दें। फलने व न फलने वाले दोनों तरह के पेड़ों पर इसका छिड़काव करें। दस दिनों के अंदर इसका दुबारा प्रयोग करें। फसल इन कीटों के प्रभाव से मुक्त हो जाएगा। वैज्ञानिकों ने आपात स्थिति में 7541073388 पर संपर्क करने की भी सलाह दी।

कीटों से फसल के बचाओ को छिड़काव के तकनीक का प्रदर्शन करते वैज्ञानिक

लीची के फलों पर लगे कीट।

दैनिक भास्कर

वैज्ञानिकों ने लीची के बगानों को निरीक्षण कर किसानों को दी सलाह

लीची के पौधों पर है स्टिंग बग कीट का प्रकोप, मंजर लगते ही कर जाएंगे चट

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

लीची के मंजर व फल को खाने वाला स्टिंग बग कीट।

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर द्वारा कार्यान्वित फार्मर फ़र्स्ट परियोजना अंतर्गत मेहसी के मिर्जापुर में कुछ लीची बगीचों का भ्रमण एवं सर्वेक्षण अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ कुलदीप श्रीवास्तव एवं डॉ संजय कुमार सिंह ने रविवार को किया। वैज्ञानिकों इस बार लीची के मंजर व फल को बचाने के लिए पहले से ही तैयारी कर रहे हैं। गत वर्ष लीची के फल और मंजरों पर स्टिंग बग कीट से काफी नुकसान हुआ था। कीट के कारण 80% फल झड़ गया था। इस वर्ष इस तरह की कोई समस्या ना हो।

इसके लिए अभी से ही केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह के निर्देश पर राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डॉ विशाल नाथ की देख रेख में एक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। निरीक्षण के बाद वैज्ञानिकों ने बताया कि कई पेड़ों पर स्टिंग बग का प्रौढ़ अभी मौजूद है। पौधे या उनकी शाखाओं को जोर से हिला कर देखने पर कुछ प्रौढ़ कीट जमीन पर गिरे हैं। इसका मतलब है कि इन कीटों का पूरी तरह सफाया नहीं हुआ है। इनका प्रकोप फिर से होने वाला है। यही प्रौढ़ कीट हजारों की संख्या में अंडा देगी जिसके बच्चे पूरे मंजर एवं फल को सफाचट कर देंगे। वैज्ञानिकों ने किसानों को तत्काल लीची के पौधों को हिला कर स्टिंग बग को नीचे गिरा कर गिरे हुए प्रौढ़ स्टिंग बग को इकट्ठा कर जमीन में दबा देने की सलाह दी है। जिन किसानों के बगीचे में पिछले वर्ष अत्यधिक प्रकोप था वह अभी तत्काल ट्राइजोफाश 15 मीली में थापोक्लोप्रिड 0.5 मीली एवं स्टीकर का घोल 0.3 मीली को एक लीटर पानी में घोलकर पेड़ों पर छिड़काव करें। उपयुक्त दोनों रसायन एवं स्टीकर का ज्यादा घोल बनाने हेतु दवा की मात्रा प्रति लीटर के अनुसार ही गुणित कर ही पानी मिलाएं। पहला छिड़काव 10 से 15 फरवरी एवं दूसरा छिड़काव 25 से 28 फरवरी 2019 को करने की सलाह दी गई। वैज्ञानिकों का आकलन था कि यह प्रयास सामूहिक स्तर पर करने से अत्यधिक लाभ होगा। जिनके पास कम पेड़ हो तो पेड़ को हिला कर ही कीटों को मारा जा सकता है। किसी प्रकार की समस्या आने पर वैज्ञानिकों ने संपर्क करने का आग्रह किसानों से किया।

जन्मदिन की बधाई

मान्या सिंह

www.jagran.com

चकिया/अरेराज/सिकरहना/पकड़ीदयाल

लीची के मंजर को नुकसान पहुंचा सकते हैं स्टिक बग कीट

मेहसी, संस : लीची के किसानों को अब सावधान हो जाने का वक्त आ गया है। पिछले वर्ष की भांति इस बार भी लीची के मंजर व फलों को चट करने वाला स्टिक बग नामक कीड़ा लीची के बागों में हमले को तैयार है। अगर अभी से इसके बचाव को लेकर सावधान नहीं हुए तो भारी क्षति उठानी पड़ सकती है।

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वैज्ञानिकों ने इस स्थिति को लेकर किसानों को उस कीट से लड़ने के लिए अभी से ही प्रयास आरंभ करने की सलाह दी है। वैज्ञानिकों के सर्वेक्षण में पुनः पाए गए प्रौढ़ कीट केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह द्वारा स्वीकृत व राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर द्वारा कार्यान्वित फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत वैज्ञानिकों की दो सदस्यीय टीम ने पूर्व में प्रभावित लीची के बागों का भ्रमण कर सर्वेक्षण किया। टीम में अनुसंधान केंद्र के कीट वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव व वरीय वैज्ञानिक डॉ. संजय सिंह शामिल थे। बागों के सर्वेक्षण के दौरान स्टिक बग नामक यह कीट प्रौढ़ावस्था में काफी संख्या में लीची के बागों में पाए गए हैं। इनसे बचाव के लिए किसानों को अभी से ही सामूहिक प्रयास आरंभ करने की सलाह दी गई है। पिछले वर्ष हुआ था लीची को नुकसान मई 2018 में इस कीट के बड़े पैमाने पर लीची के बागों में आक्रमण के कारण बड़े पैमाने पर लीची के फसल बर्बाद हुए थे। किसानों में त्राहिमाम मच गया था। बाग के बाग सुने पड़ गए थे। जब तक इससे बचाव हेतु कृषि वैज्ञानिक तत्पर होते तब तक बहुत कुछ बर्बाद हो गया था। अब ऐसा नहीं हो इस बात को लेकर वैज्ञानिक पूर्व से ही बचाव को लेकर तत्पर हो चुके हैं। बस किसानों को सक्रिय होने की जरूरत है। कैसे करें बचाव वैज्ञानिकों ने बताया कि इससे बचाव के लिए तत्काल पौधों को हिलाकर गिरे हुए प्रौढ़ कीटों को इकट्ठा कर जमीन में दबा दें। जिन किसानों के बागों में पिछले साल इसका अधिक प्रभाव था वे तत्काल ट्राइजोफास (1.5 मिली), थायोक्लोपीड (0.5 मिली) एवं स्टीकर (0.3 मिली) को एक लीटर पानी में घोल तैयार कर छिड़काव करें। उपरोक्त रसायनों का ज्यादा घोल बनाने हेतु दवा की मात्रा प्रति लीटर के अनुसार गुणित कर उपयोग करें। पहला छिड़काव 10 से 15 फरवरी व दूसरा छिड़काव 25 से 28 फरवरी के बीच निश्चित रूप से कर लें। झारखंड से आया है कीट अनुसंधान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक डॉ. संजय सिंह ने बताया कि स्टिक बग नामक इस कीट का सर्वाधिक प्रभाव पूर्वी चंपारण के मेहसी व चकिया क्षेत्र में पाया गया है टेसारो टोमा जवनिका प्रजाति का यह कीट झारखंड में वृहत पैमाने पर पाया जाता है।

संभावना व्यक्त की गई है कि लकड़ी लदे किसी ट्रक के माध्यम से यह इस क्षेत्र में पहुंचा है। कुसुम के पौधों से इसे विशेष लगाव है। फरवरी से अप्रैल के बीच लीची के बागों में यह अटैक करता है। 30 सेंटीमीटर मंजर की लंबाई वाले डंटल पर इस कीट की संख्या कम से कम 50 से 100 होती है। जो फसलों को चूस जाता है। उन्होंने कहा कि इससे बचाव के लिए सामूहिक स्तर पर प्रयास ज्यादा सफल साबित होगा। इस संदर्भ में आवश्यक जानकारी के लिए दो नंबर भी सार्वजनिक किए गए हैं। 9546891510 व 7541073388 पर किसान संपर्क कर आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

स्टिंक बग कीट • जागरण

परेशानी

- बागों में पाए गए हैं कीट, लीची उत्पादन हो सकता है प्रभावित
- कीट से बचाव के लिए विशेषज्ञ दे रहे सलाह

लीची में लगने वाले कीड़ों से छुटकारा

जासं, मोतिहारी : राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डॉ. विशाल नाथ ने गांधी मैदान में आयोजित तीन दिवसीय कृषि कुंभ के प्रथम दिन किसानों को लीची फसल की सुरक्षा के टिप्स दिए। उन्होंने बताया कि सर्वेक्षण से पता चला है कि जिले के मेहसी, चकिया व पहाड़पुर के कुछ क्षेत्रों में लीची में बग का प्रकोप हो रहा है। ये कीट छोटे और उड़ने या रेंगने वाले होते हैं। जो फरवरी-मार्च में फसलों के आस-पास पहुंच रहे हैं। इनके शरीर से एक विशेष तरह की दुर्गंध निकलती है। ये कीट लीची के मंजर और छोटे फलों का रस चूस कर नुकसान पहुंचाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए किसानों को कुछ उपाए करने होंगे।

किसान ये कर सकते हैं उपाए

इस कीट से फसल को बचाने के लिए किसान पौधों को हिलाकर बग को नीचे गिरा ले और उन्हें एकत्रित कर मिट्टी में दबा दें। साथ ही ट्राइजोफास 1.5 मिली, थिवाक्लोप्रिड 0.5 मिली व स्टीकर 0.3 मिली को प्रति लीटर पानी में मिलाकर बगीचे में स्प्रे करें।

दैनिक भास्कर

20-Sep-2019
Page 2

कार्यक्रम • फार्मर्स फर्स्ट परियोजना अंतर्गत मेहसी के लीची बागान में एक दिवसीय प्रशिक्षण का किया अयोजन

बागवानी फसलों में कीट नियंत्रण की दी जानकारी

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

पूर्व केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह की पहल पर चल रहे फार्मर्स फर्स्ट परियोजना अंतर्गत मेहसी के लीची बागान में एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित की गई। प्रशिक्षण राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर द्वारा किसानों को दिया गया। इस दौरान बागवानी फसलों में समसामयिक कीट एवं व्याधि नियंत्रण की जानकारी दी गई। परियोजना अन्वेषक एवं लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डा. संजय कुमार सिंह ने आम एवं लीची बाग में फल गिरने की समस्या, अनियमित फलन,बड़े पौधा का सुखना, छाल फटना व खाद एवं उर्वरक के डोज को विस्तृत रूप से बताया। वैज्ञानिक डा.कुलदीप श्रीवास्तव ने लीची में माइट, पत्ती खाने वाला कीड़ा, फल बंधक व आम के पेड़ों पर फल पर पत्ती खाने वाला कीड़ा दहिया कीट से निपटने के गुर सिखाए।

मेहसी में किसानों को प्रशिक्षण देते कृषि वैज्ञानिक।

फल गिरने से रोकने की दवा का किया प्रदर्शन : किसानों के बीच फल गिरने से रोकने की दवा का सदृश्य प्रदर्शन वैज्ञानिकों ने किया। किसानों को स्टीकर का प्रयोग हर कीटनाशक के साथ करने की सलाह दी गई। किसानों को आम के बाग में कूबड़ होने पर उसे तेज धारदार हथियार से काटकर हटा देने तथा 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर कॉपर ऑक्सीक्लोराइट का प्रयोग कटे भाग पर करने की सलाह दी गई। डाईफेनकोजोल 1 मिलीलीटर प्रति लीटर का छिड़काव मंजर आने के बाद करने की सलाह दी।

वैज्ञानिकों ने बागों का किया निरीक्षण

लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने दामोदरपुर के किसान रामाशंकर सिंह एवं हरेंद्र पटेल के बागों का निरीक्षण किया एवं छत्रक प्रबंधक करने की सलाह दी। इस अवसर पर 40 किसानों को मुद्रा स्वायल कार्ड का वितरण भी किया गया। आम एवं लीची के बाग में प्रयुक्त होने वाले कीटनाशकों को कुछ किसानों को प्रयोग हेतु वितरित किया गया। किसानों को सलाह दी गई कि आम में एकांतर फलन की समस्या को रोकने हेतु कल्तार का प्रयोग 3 मिलीलीटर प्रति मीटर छाया क्षेत्र के अनुसार तना से 15-20 मीटर दूरी पर 30 सेंटीमीटर गहरी नाली बनाकर इसी माह अवश्य दें तथा समुचित नमी बनाए रखें। लीची अनुसंधान केंद्र के निदेशक डा. विशाल नाथ ने लीची एवं आम के उत्पादकता वृद्धि पर वैज्ञानिकों को विशेष बल देने का अनुरोध किया। मौके पर गजेंद्र मिश्र, संजय कुमार, कृष्ण नारायण ठाकुर, अभिषेक कुमार, ओम प्रकाश मिश्रा, कृष्णा सिंह रामदयाल सहनी, मिथिलेश कुमार, अरुण राय, अखिलेश कुमार, हरि मिश्र, विकास कुमार, शिवमंगल राम सहित अनेक किसानों ने भाग लिया

आयोजन - कीट प्रबंधन एवं रोगों से बचाव के लिए एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित, किसानों को दी गई जानकारी

नीम तेल का छिड़काव लीची के लिए फायदेमंद

मेहसी, संस : मेहसी के मिर्जापुर स्थित लीची के बागों में टेसरटोमा जावानिका प्रजाति के स्टिंग बग नामक कीटों का फलों पर हुए हमले एवं शेष बचे फलों को उसके कुप्रभाव से बचाने हेतु राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर एवं जिला उद्यान कार्यालय मोतिहारी के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कीट प्रबंध विशेषज्ञ डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि यह कीट झारखंड में होने वाले कुसुम से माइग्रेट होकर यहां पहुंचा है। यह एक शक्तिशाली कीट है। इसे टॉरिओफेस, कराटे, स्टिकर, नुआन जैसे आवश्यक दवाओं का छिड़काव कर नियंत्रण में लाया जा सकता है। इसके लिए किसानों को तत्पर होना होगा। उन्होंने कीट लगे दो पेड़ों पर छिड़काव का प्रत्यक्षण कर किसानों को प्रायोगिक जानकारी दी। छिड़काव के बाद मरने वाले कीटों को बुहार कर जलाने पर बल दिया। मोनोसिल नामक दवा के छिड़काव को फलों के लिए घातक व प्रतिबंधित होने की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि पेड़ों पर लीची का आकार जब इलायची जैसा हो जाए तो 10 दिन के अंतराल पर कम से कम तीन बार नीम के तेल का छिड़काव कर किसान ऐसे कीटों पर काबू पा सकते हैं। इससे लीची के अंदर कीड़ा लगने की शिकायत भी नहीं मिलेगी। इस प्रकार के प्रयोग के लिए मंजर लगने के साथ अगर किसान फलों और पौधे की सुरक्षा के प्रति सजग हो जाएं तो हो सकता है कि ऐसी समस्याएं उत्पन्न ही नहीं हों। इस बीच सहायक निदेशक उद्यान डॉ. श्रीकांत ने किसानों की समस्याओं को सुना व कृषि से संबंधित संस्तुत दवाओं की उपलब्धता मेहसी में सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया। अनुसंधान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक डॉ. विनोद व डॉ संजय कुमार सिंह ने आम व लीची में रोग प्रबंधन, फलों के फटने व गिरने के साथ साथ खाद एवं उर्वरक के प्रयोग पर विस्तार से जानकारी दी। मौके पर भाजपा किसान प्रकोष्ठ के जिला महासचिव अजय कुमार सिंह, फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के आलोक राज, शंभु राम, बीएचओ संजय कुमार, प्रगतिशील किसान गणेश कुशवाहा, संजय कुमार लड्डू, त्रिभुवन प्रसाद, पारस सिंह, लालबाबू मिश्रा,

- मुसहरी मुजफ्फरपुर एवं जिला उद्यान कार्यालय मोतिहारी ने की पहल
- फलों के फटने व गिरने के साथ साथ खाद के प्रयोग को दी जानकारी

किसानों को लीची फसल के बचाव की तकनीक की जानकारी देते वैज्ञानिक • जागरण

शीघ्र ही बहुरेंगे तिरूवाह के दिन, पीडब्ल्यूडी कराएगा 32 किमी सड़क का निर्माण

बजरिया, संस : तिरूवाह के दिन शीघ्र ही बहुरने वाले हैं। पीडब्ल्यूडी शीघ्र ही इस क्षेत्र में 32 किमी सड़क का निर्माण कराएगा। बैलाहां एनएच से अजगरी, सिसवनिया, उटवा, फुलवार, गम्हरिया, चितहां, निर्देश, रघुनाथपुर होते हुए बैला नहर चौक तक सड़क का निर्माण होगा। पीडब्ल्यूडी के अभियंता अनुपम कुमार, आसिफ इकबाल व सतीश कुमार की टीम ने बुधवार को सिसवनिया गांव में सड़क की पैमाइश की तथा बताया कि तिरूवाह के लोगों को बाढ़ के दिनों में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बता दें कि इस सड़क के निर्माण के लिए विधायक डॉ. शमीम अहमद ने विधानसभा में कई बार मुद्दा उठाया था।

हामिद रजा, शाहिद रजा, लतीफुर रहमान, समीउल्लाह, फैजान अहमद, वीरेंद्र साह, प्रताप सिंह आदि उपस्थित थे।

जैविक खाद व कीटनाशक बनाने का प्रशिक्षण

मेहसी. प्रखंड के उझिलपुर गांव में बुधवार को फामर्स फर्स्ट कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के कृषि वैज्ञानिकों ने ग्रामीणों को जीरो बजट से जैविक खाद व कीटनाशी दवा बनाने का गुर सिखाया. वैज्ञानिक डॉ एसके सिंह ने बताया कि ग्रामीणों को पंच गव्य नीम आधारित कीटनाशी दवा जीवामृत ट्राइकोडर्मा बनाने की विधि बतायी गयी. केमिकल आधारित खाद व कीटनाशक के प्रयोग से स्वास्थ्य खराब हो रहा है. इसका प्रयोग कम से कम करने के लिए स्वयं कीटनाशी व खाद तैयार करने की आवश्यकता है. वैज्ञानिक डॉ विनोद कुमार डॉ प्रभात कुमार ने लोगो को प्रशिक्षित किया. मौके पर किसान जगरनाथ सहनी, जंग बहादुर सहनी, रघुवीर सहनी, प्रकाश मिश्रा, ललन प्रसाद यादव सहित अनेक किसान थे.

जफ्फरपुर, 14 जनवरी 2020

रसायन रहित सब्जी का उत्पादन जीवन के लिए वरदान

पीपरा, संस : रसायन रहित सब्जी का उत्पादन वर्तमान सदी में मानव जीवन के लिए वरदान साबित होंगे। फल व सब्जियों पर अत्यधिक रसायन के प्रयोग से यह सेहत के लिए हानिकारक साबित हो रहे हैं। इसलिए किसानों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रसायन रहित सब्जी उत्पादन पर बल देने की जरूरत है। उक्त बातें भारतीय सब्जी अनुसंधान केंद्र बनारस के प्रधान कीट वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव ने कही। वे चकिया प्रखंड के महुआवा व चिंतामपुर में फॉर्मरफर्स्ट परियोजना से जुड़े किसानों को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी मुजफ्फरपुर के तत्वावधान में किया गया था। भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के प्रधान किट वैज्ञानिक डॉ कुलदीप श्रीवास्तव ने किसानों का मार्गदर्शन करते हुए बताया कि अत्यधिक रसायनों के छिड़काव से कीट एवं बीमारियों की समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं। गोमूत्र एवं नीम/मदार पत्ती निर्मित अमृतपानी को 10 मिली प्रति लीटर के हिसाब से छिड़ककर किसान सब्जियों को कीट व्याधियों से बचा सकते हैं। डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि 1 फरवरी 2020 को भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी में राष्ट्रीय किसान मेला का आयोजन हो रहा है। किसान इसमें हिस्सा लेकर विभिन्न प्रकार की नई तकनीकों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। फार्मर फर्स्ट परियोजना के प्रधान अंवेषक डॉ संजय कुमार सिंह ने बताया कि परियोजना से जुड़े प्रगतिशील किसानों को सब्जी उत्पादन के उन्नत तकनीक पर प्रशिक्षण हेतु वाराणसी के सब्जी अनुसंधान संस्थान में सरकारी खर्च पर भेजा जाएगा। मौके पर नवीन कुमार, प्रदीप कुमार, भरत कुशवाहा, रामप्रवेश सिंह, नवलकिशोर सिंह, सुमन पंडित, सुदामा सहनी, बब्लू कुमार, रामनाथ कुमार, सचिन कुमार, राजीव कुमार, महेश सहनी, चंद्रिका सहनी, संजय कुमार, मीना देवी, उमरावती देवी व चंपा देवी आदि मौजूद थे।

10 मिलीलीटर गोमूत्र व नीम/मदार पत्ती निर्मित पदार्थ का करें छिड़काव

- रसायन के प्रयोग से कीट एवं बीमारियों की बढ़ रही समस्या
- राष्ट्रीय कृषि मेला में शामिल होंगे चिंतामपुर के प्रगतिशील किसान
- आगामी एक फरवरी को बनारस में आयोजित किया जाएगा मेला
- मेले में किसानों को उन्नत खेती के लिए दिया जाएगा प्रशिक्षण

पीपरा में रसायन रहित सब्जी उत्पादन की जांच करते बाएं से दूसरे भारतीय सब्जी अनुसंधान केंद्र बनारस के प्रधान कीट वैज्ञानिक डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव • जागरण

उत्पादकों के लिए लीची का थैलीकरण विशेष लाभप्रद

- 95 प्रतिशत फलों को बचाया जा सकता कीटों के प्रभाव से
- राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

मेहसी, संस : लीची के फलों को फटने, झुलसने व कीटों के प्रभाव से मुक्त रखना है तो किसान फलों का थैलीकरण करें। इससे कई लाभ होंगे। थैलीकरण से फलों के आकार व गुणवत्ता में बढ़ोतरी तो होगी ही 95 प्रतिशत फलों को कीटों के प्रभाव से बचाया जा सकेगा। तुड़ाई से 25 दिन पहले इसका प्रयोग काफी लाभदायक होगा। इससे ए ग्रेड फसल प्राप्त किए जा सकेंगे। उक्त बातें राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर के प्रधान वैज्ञानिक एसके पूर्वे व वरीय वैज्ञानिक संजय कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से कहीं। वे केंद्र द्वारा संपोषित फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत लीची के बागों का निरीक्षण कर रहे थे। भ्रमण के दौरान वैज्ञानिकों ने कई बागों को स्टिंग बग नामक कीटों से प्रभावित देखा। पुनः कीटों से फलों के बचाव व शाही लीची के गुच्छे का थैलीकरण के लाभ पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि थैलीकरण के लिए पॉली प्रायोलिन अर्थात बिना बुना हुआ थैली जो गुलाबी व सफेद रंग का होता है, का प्रयोग किसान कर सकते हैं। इस क्रम में वैज्ञानिकों ने बखरी नाजीर के रामबचन कुमार, दामोदरपुर के रिपुराज सिंह, मिर्जापुर के ज्याउर रहमान, मेहसी के अजय कुमार सिंह, उझिलपुर के कृत राम, शंभू राम, मदन राम, गगनदेव राम, जयलाल राम आदि के बागों का सघन निरीक्षण किया। साथ ही बागों में थैलीकरण तकनीक का प्रदर्शन भी किया। अनुसंधान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. विशालनाथ ने बताया कि बागों में कीटों के प्रभाव से बचाव को लेकर वैज्ञानिक लगातार लीची के बागों का भ्रमण कर आवश्यक उपाय कर रहे हैं।

लीची का थैलीकरण करते वैज्ञानिक • जागरण

मेहसी में पशु चिकित्सा शिविर आयोजित

मेहसी. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित फार्मर फस्ट कार्यक्रम के तहत उझिलपुर रामपुरवा गांव में पशु स्वास्थ्य जांच शिविर सह पशु रोग निदान शिविर का आयोजन राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी मुजफ्फरपुर द्वारा आयोजित की गई. कार्यक्रम का शिविर में पशु चिकित्सा महाविधालय पटना के सहायक प्राध्यापक डॉ पंकज कुमार, डॉ रमेश तिवारी, डॉ चंद्रशेखर आजाद, डॉ धर्मेंद्र कुमार अन्य विशेषज्ञ ने बैल, गाय, भैस, बकरी व मुर्गी का इलाज कर दवा दिया. मौके पर डॉ रामकिशोर पटेल, डॉ कुलदीप श्रीवास्तव ने आम लीची के रोग एवं बचाव के संबंध में बताया. मौके पर परियोजना वैज्ञानिक प्रभात कुमार, प्रॉजेक्ट वर्कर आलोक राज, शम्भू राम, भाजपा नेता अजय कुमार सिंह, उमेश शर्मा सहित अनेक किसान थे.

दैनिक भास्कर

पशुओं के स्वास्थ्य की जांच कर बीमारियों का इलाज

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत मेहसी प्रखंड के उझीलपुर गांव में पशु स्वास्थ्य शिविर सह वैज्ञानिक-पशुपालक वार्ता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना के सहयोग से हुआ।

इसमें 120 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया तथा बीमारियों का तुरंत इलाज किया गया। ज्यादातर पशुपालकों ने बार बार गर्म होने, पशुओं में मकुनी एवं जू का अत्यधिक प्रकोप की समस्या बताई गई। कुछ भैंस में दस्त तथा कमजोरी भी पाई गई। बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना के प्रसार शिक्षा के हेड डा. पंकज कुमार ने बताया कि किसानों को बकरियों में दस्त,पेट फूलना की आम समस्या पाई गई। फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के मुख्य अन्वेषक व राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वरीय डा. संजय कुमार सिंह ने पशुपालकों को पशुओं को चारा प्रबंधन व समय पर टीकाकरण करवाने की सलाह दी।

शिविर में पशुओं की जांच कर दी गई दवा, बताए गए कई उपाय

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

मेहसी के बखरी नाजिर में पशु स्वास्थ्य शिविर में जांच करते डॉक्टर।

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर की ओर से कार्यान्वित फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के तहत मेहसी प्रखंड के बखरी नाजिर गांव में शनिवार को पशु स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना के सहयोग से आयोजित हुआ। पशु चिकित्सक डा रणवीर कुमार सिन्हा , डा चंद्रशेखर आजाद एवं डा पंकज कुमार ने बताया कि शिविर में 30 पशुओं के गोबर की जांच कर आव की समस्या का समाधान किया गया। 80 भैंस, 130 गाय तथा 120 बकरी और मुर्गी के देखभाल में स्वास्थ्य समस्या का निदान किया गया। अधिकांश पशुओ में ज्यादातर गर्भधारण न होना, वाह्य परजीवी, कृमि का प्रकोप एवं दस्त व डिस्टोकिया आदि प्रमुख समस्या पाए गए। शिविर में 15 पशुओं का गर्भ जांच कर दवा का वितरण भी किया गया।

फार्मर्स फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेशक एवं लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक डा. संजय कुमार सिंह ने कहा कि यदि किसी भी किसान को पशु संबंधी समस्या हो तो उसे संस्थान एवं विश्वविद्यालय को सूचित करें। इस पर पशु जांच शिविर का पुनः आयोजन कर समस्या का समाधान किया जाएगा। मौके पर लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक प्रभात कुमार, परियोजना के फील्ड टेक्नीशियन शंभु राम सहित 60 पशुपालक उपस्थित थे।

आयोजन फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत मेहसी प्रखंड के उझिलपुर गांव में लगा शिविर

पशु चिकित्सा शिविर में 120 मवेशियों की जांच

02 मवेशियों की चिकित्सकों ने की सफल शल्य चिकित्सा

मवेशियों में दस्त और पेट फूलने की समस्याएं आम, जांच के बाद दी गई दवा

किसानों के बीच चूजा वितरण करते वैज्ञानिक व पशु चिकित्सक • जागरण

मेहसी, संस : फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत मेहसी प्रखंड के उझिलपुर गांव में पशु स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर सह वैज्ञानिक-पशुपालक वार्ता का आयोजन बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना के सहयोग से किया गया। इस क्रम में करीब 120 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण व इलाज किया गया। ज्यादातर पशुपालकों की समस्या में पशुओं के बार बार गर्म होने, पशुओं में मकुनी एवं जू का अत्यधिक प्रकोप होने, कुछ भैंसों में दस्त तथा कमजोरी की शिकायत शामिल थी।

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना के प्रसार शिक्षा के प्रमुख डॉ पंकज कुमार ने बताया कि जांच के दौरान बकरियों में दस्त व पेट फूलने की आम समस्या पाई गई। दो गाय एवं दो भैंसों की शल्य चिकित्सा भी की गई। बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना के गर्भ विज्ञान विशेषज्ञ डॉ आलोक कुमार, पशु औषधि विशेषज्ञ डॉ विवेक कुमार सिंह एवं शोधार्थी डॉ मनीष मुखर्जी के अलावा रंजय कुमार शर्मा आदि ने किसानों को पशुओं में होने वाले विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया व उसके निदान के उपाय बताए। वैज्ञानिकों ने जांच के दौरान पशुओं में ब्राह्य व अंतः परजीवियों का प्रकोप अत्यधिक पाया। बचाव हेतु सलाह देते हुए कहा कि पशुओं को खुरहा व गलघोंटू रोग के नियमित टीकाकरण से संक्रामक रोग से बचाया तो जा ही सकता है। फार्मर फर्स्ट परियोजना के मुख्य अन्वेषक और राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के वरीय वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार सिंह ने पशुओं को चारा प्रबंधन व समय पर टीकाकरण करवाने की सलाह दी। इस क्रम में 35 किसानों व पशुपालकों को वनराजा मुर्गी के 20-20 चूजे वितरित किए गए। मौके पर प्रोजेक्ट के एसआरएफ आलोक राज एवं शम्भू राम सहित लाभार्थियों में उझिलपुर के नागा राम, सुदेश राम, शंभू राम, गगनदेव राम, नवल राम, राजकुमार सहनी एवं जयकिशुन राम मौजूद थे।

उन्नत नस्ल का बकरा सहित बटेर और मुर्गी के चूज़ों का किया गया वितरण

भास्कर न्यूज़ | मेहसी

मेहसी में चूजों का वितरण करते कृषि वैज्ञानिक।

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुसहरी मुजफ्फरपुर द्वारा कार्यान्वित फार्मर्स फर्स्ट परियोजना अंतर्गत मेहसी प्रखंड के बखरी नाजिर के 12 महिला समूहों को बकरी की नस्ल सुधार हेतु ब्लैक बंगाल का नस्ल का बकरा दिया गया। जिससे बकरियों की प्रजनन क्षमता में वृद्धि होगी। साथ ही वनराज मुर्गी नस्ल के 800 चूजे एवं 100 जापानी बटेर के चूजे भी 15 महिलाओं के समूह के साथ साथ दामोदरपुर के 15 युवा किसानों को दिया गया।

प्रदर्शन भी पिछले हफ्ते ही प्रखंड के उझीलपुर के 40 तथा बखरी नाजिर के 25 महिलाओं के बीच प्रदर्शित की गई थी। परियोजना निदेशक एवं गांव में मालती देवी, टुनटुन देवी, कैलाश बैठा, माया देवी, अनिता देवी, सुनीता देवी, रिंकू देवी, आदि को लाभ मिला। मौके पर

चलाया सफाई अभियान

पिपरा। सीताकुंड धाम परिसर में मंगलवार को लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के तत्वावधान में धाम परिसर की सफाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें परिसर के विभिन्न मंदिरों ,तालाब तटों एवं परिसर आदि की सफाई की गयी। सफाई कार्य का आरंभ पिपरा विधायक शयाबाबू प्रसाद यादव ने किया। इस अवसर पर यहां 50 महिलाओं को मशरूम उत्पादन का भी प्रशिक्षण वैज्ञानिकों द्वारा दिया गया। मौके पर लीची अनुसंधान केंद्र के डायरेक्टर डॉक्टर विशाल नाथ पांडे, को जागरुक करने का काम कर रहे हैं। इस सिलसिले में सोमवार को पूर्व मुखिया के नेतृत्व में बैरिया बाजार से पर्यावरण जागरुकता रैली निकाली गयी। रैली को थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार, पूर्व मुखिया व अधिवक्ता ठाकुर प्रसाद गुप्त ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जो गांधीघाट तक आया। गांधीघाट स्थित गांधी प्रतिमा पर फूल माला चढ़ाने के बाद एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। मौके पर भाजपा नेता सुभाष सिंह कुशवाहा, अनिरुद्ध सहनी, रघुवर प्रसाद, बद्री पासवान, ई. ललन कुमार, कुमार शिवम सहित अनेक लोग थे। (निसं)

सलाह किसानों को मुर्गी और बत्तख पालन को लेकर किया गया जागरूक

रोजगार के लिए बेहतर विकल्प बत्तख पालन

किसानों के बीच मुर्गी व बत्तख का चूजा वितरण करते वैज्ञानिक • जागरण

मेहसी, संस : रोजगार उन्मुखीकरण की दिशा में मुर्गीपालन से बेहतर विकल्प है बत्तख पालन। इसमे जोखिम कम और लाभ ज्यादा है। बत्तख के मांस व अंडे रोग प्रतिरोधक होते हैं। जिससे इसकी मांग अधिक होती है। बिना तालाब के भी हम दो से तीन फुट गहरी व चौड़ी नाली बनाकर आसानी से इसका पालन कर सकते हैं।

उपरोक्त बातें राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक सह फार्मर फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। वे परियोजना के तहत मेहसी के बखरी नाजीर व उझिलपुर में उन्नत नस्ल के बत्तख के चूजों का वितरण कर रहे हैं। इस क्रम में उन्होंने इंडियन रनर व खाकी कैंपेबल नस्ल के करीब 250 चूजों का वितरण किसानों के बीच किया। स्वरोजगार के प्रति किसानों को जागरूक करते हुए कहा कि इंडियन रनर नस्ल की जगह खाकी कैंपेबल का अंडा देने की क्षमता अधिक है। यह प्रति वर्ष तीन सौ अंडे दे सकती है। दोनों प्रजाति चार से पांच महीने के अंदर तैयार हो जाते हैं। इसके पालन के लिए प्रति वर्गफुट 1.5 वर्गफुट जमीन की आवश्यकता होती है। हम धान व मक्के की खेत में भी इसका पालन आसानी से कर सकते हैं। भोजन के रूप में इसे भींगा हुआ चावल का दाना भी दे सकते हैं। जिन किसानों को लाभान्वित किया गया उनमें बखरी नाजीर के करण सहनी, रमाकांत कुमार, राजकुमारी देवी, पवन सहनी, बुनैल सहनी, माला देवी, सुनैना देवी, कैलाश बैठा, दीनानाथ सहनी, राधिका देवी, उझिलपुर के शंभू राम, विकास राम, रमावती देवी शामिल थे। मौके पर प्रोजेक्ट वर्कर संजय कुमार चौधरी, मनोज कुमार व शंभू राम मौजूद थे।

केविके परिसर पीपराकोठी में किसान जागरूकता सम्मेलन का आयोजन

कुपोषण के खिलाफ 30 तक चलेगा राष्ट्रीय पोषण अभियान : राधामोहन

- पूर्व मंत्री श्री सिंह के जन्मदिन पर दीं शुभकामनाएं

प्रतिनिधि ▷ पीपराकोठी

सबसे ज्यादा दो से पांच वर्ष आयु के बच्चे कुपोषण के शिकार होते हैं. पीएम मोदी एक-30 सितंबर तक राष्ट्रीय पोषण अभियान मना रहा है. मेरा आज जन्मदिन है. मैं अपने घर केक काटने और भोज करने के बजाय आंगनबाड़ी केंद्र पर गया और बच्चों को अंडा और फल बांटा है, ताकि बच्चे स्वस्थ्य रहे. आप सभी इस माह में गरीब बच्चों व महिलाओं को अंडा और फल खिलाने का कार्य करें. क्योंकि बच्चे स्वस्थ्य होंगे तो हर नागरिक स्वस्थ्य होगा. और देश भी स्वस्थ्य होगा.

उक्त बातें स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के तत्वावधान में आयोजित किसान जागरूकता सम्मेलन को संबोधित करते हुए पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री सह स्थानीय सांसद राधामोहन सिंह ने कही. उन्होंने कहा कि मोदी है तो सब कुछ मुमकिन है. श्री सिंह ने सम्मेलन में आये किसानों को अपने घर के आसपास फल और सब्जी की खेती करने की बात कही. कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री प्रमोद कुमार ने कहा कि हम यहां के सभी लोग राधामोहन बाबू के आभारी हैं कि इस पीपराकोठी को कृषि हब बनाया. उन्होंने खुद के 400 पेड़ों के लीची के बगीचे में हुए समस्या के समाधान करने की बात वैज्ञानिकों से कही. विधायक सचिंद्र प्रसाद सिंह ने केंद्र सरकार सहित श्री सिंह के कार्यों की सराहना की. इस दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सिंह ने पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड द्वारा निगमित समाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत जिले में निर्मित एवं निर्माणाधीन विभिन्न दस परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया. मंच संचालन डा लालबाबू प्रसाद ने किया. मौके पर विधायक श्यामबाबू राय, राजू तिवारी, राजेंद्र प्रसाद गुप्ता, अखिलेश सिंह, विशाल नाथ पांडेय, निदेशक डॉ एके सिंह, निदेशक अटारी डॉ अंजनी कुमार सिंह, डॉ मो मोनुबुरुल्लाह, केविके प्रमुख डॉ अरविंद कुमार सिंह, आइसीएआर के डॉ रायजादा, वैज्ञानिक नेहा पारिख, मुखिया रवींद्र सहनी, दिवाकर पांडेय, कुमार राजेश सिंह, टुन्ना गिरि, मुन्ना गुप्ता, अवधेश प्रसाद, डॉ रामकिशोर पटेल, डॉ संजय कुमार सिंह, डॉ नारायण लाल सहित कई वैज्ञानिक व किसान मौजूद थे.

इधर, छह स्थानों पर सांसद कोष से सीसीटीवी कैमरा लगाया गया है, जिसका उद्घाटन पूर्व केंद्रीय मंत्री राधामोहन सिंह ने रविवार को किया. बताया कि थाना क्षेत्र के पीपराकोठी चौक, वाटगंज, चांदसरैया बाजार, मठबनवारी चौक, मोहनापुल व जीवधारा चौक जैसे संवेदनशील स्थानों पर सीसीटीवी कैमरा लगाया गया है, जिससे आपराधिक घटनाओं में कमी आयेगी. इस मौके पर विधायक श्यामबाबू प्रसाद यादव, सचिंद्र प्रसाद सिंह, डीएसपी मुरली मनोहर मांझी, शिवजी सिंह, अखिलेश सिंह, विधानसभा प्रभारी कामेश्वर चौरसिया, मुखिया रवींद्र सहनी, दिवाकर पांडेय, कुमार राजेश सिंह, मुन्ना गुप्ता, मीडिया प्रभारी टूना गिरि, अवधेश प्रसाद व अमरजीत यादव सहित अन्य मौजूद थे.

पीपरा. पूर्व केंद्रीय मंत्री सांसद राधामोहन सिंह ने थाना में लगाये गए सीसीटीवी कैमरा का उद्घाटन किया. विधायक श्यामबाबू प्रसाद यादव, सचिंद्र प्रसाद, रामनारायण सिंह, धर्मदेव कुशवाहा, संजय , थानाध्यक्ष मुकेश कुमार सहित पुलिस बल एवं सैकड़ों लोग मौजूद थे.

रेलवे परिसर में चंपा का पौधा लगाते सांसद राधामोहन सिंह व अन्य.

रेलवे परिसर में लगाया चंपा का पौधा

मोतिहारी. रेलवे स्टेशन परिसर में सोमवार को सांसद राधामोहन सिंह ने जन्मदिन पर पौधा लगाने के साथ ही योजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन किया . इस दौरान आंगनबाड़ी केंद्रों पर राष्ट्रीय पोषण अभियान की शुरुआत हुई . शहर के बेलबनवा आंगनबाड़ी केंद्र पर बच्चों के बीच पोषक आहार का वितरण किया . उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार बिहार में 54 .5 प्रतिशत शिशुओं में 06 महीने के बाद अनुपूरक आहार की शुरुआत हो पाती है, जबकि पूर्वी चंपारण में 42 .3 प्रतिशत शिशु ही 06 माह के बाद अनुपूरक आहार की शुरुआत कर पाते हैं . श्री सिंह ने पोषण माह सितंबर के दौरान सभी सरकारी अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों के लिए पूरे माह के जारी कैलेंडर के अनुसार सक्रिय भूमिका अदा करने की अपील की . राष्ट्र के भविष्य बच्चों के लिए चलायी गयी, इन योजनाओं में पूरी पारदर्शिता लाने के लिए भी हम सबको अपनी भूमिका तेज करनी के लिए प्रभावित कदम उठाना होगा . दूसरे कार्यक्रम के तहत बापूधाम मोतिहारी रेलवे स्टेशन परिसर में उन्होंने 70 चंपा का पौधा लगाया . इस मौके पर कला- संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री प्रमोद कुमार, विधायक सचिंद्र प्रसाद सिंह, श्यामबाबू यादव, अखिलेश प्रसाद सिंह, डॉ . लालबाबू प्रसाद, मार्तण्ड नारायण सिंह, रामशरण यादव, रविभूषण श्रीवास्तव, संजीव सिंह, गुलरेज शहजाद, पंकज सिन्हा, योगेंद्र प्रसाद, विनोद कुशवाहा, केबीसी विजेता सुशील कुमार, जगजीवन पासवान, संजय सिंह, भोला मामा, सुनील पंडित, चुमन श्रीवास्तव, पप्पू पांडेय सहित स्टेशन अधीक्षक आरके त्रिपाठी, आरपीएफ इंस्पेक्टर अर्जुन कुमार, एइएन अर्जुन सिंह, एएसएम दिलीप सिंह, रेल थानाध्यक्ष कृष्णा प्रसाद सिंह आदि उपस्थित थे . इधर, नप क्षेत्र के वार्ड चार स्थित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या सात पर पार्षद गुलरेज शहजाद के द्वारा बच्चों के बीच पौष्टिक आहार में उबाला हुआ अंडा का वितरण किया गया .

प्रभात खबर Mon, 02 September 2019
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/43131267

पर्यावरण को संतुलित रखने को घर के पास करें सब्जी की खेती

आयोजन

- केविके परिसर में हुआ किसान जागरूकता सम्मेलन
- बच्चों के पोषण पर ध्यान देने के प्रति बरतें सावधानी

जासं, मोतिहारी : पूर्व केंद्रीय मंत्री सह सांसद राधामोहन सिंह ने पीपराकोठी में किसान जागरूकता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि जब तक पीएम मोदी पीएम है तो कुछ भी मुमकिन है। हमारे पास वह ताकत है कि दुनिया का कोई भी काम आसानी से कर सकते हैं। उन्होंने किसानों को पर्यावरण संरक्षण की सलाह देते हुए कहा कि घरों के आसपास सब्जियों की खेती करें।

कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में श्री सिंह ने किसानों को कई प्रकार की जानकारी दी। कहा कि केविके को दलहन उत्पादन करने वाले 150 किसानों को चयन करने की बात कहते हुए कहा कि गांधी जी के 150वीं जयंती पर उनसे शून्य बजट निवेश पर खेती करेंगे। श्री सिंह ने पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड द्वारा निगमित समाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत जिले में निर्मित एवं निर्माणाधीन विभिन्न दस परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। कुपोषण पर बोलते हुए कहा कि सबसे ज्यादा दो से पांच वर्ष आयु के बच्चे कुपोषण के शिकार होते हैं। पीएम मोदी एक सितंबर से 30 सितंबर तक राष्ट्रीय पोषण अभियान मना रही है। मेरा भी आज जन्मदिन है। मैं अपने घर केक काटने और भोज करने के बजाय आज आंगनबाड़ी केंद्र पर गया और बच्चों को अंडा और फल बांटी है, ताकि बच्चे स्वस्थ रहे। मंच संचालन डा लालबाबू प्रसाद ने किया. मौके पर कला संस्कृति मंत्री प्रमोद कुमार, विधायक श्यामबाबू राय, सचिन्द्र प्रसाद सिंह, राजू तिवारी, राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, अखिलेश सिंह, निदेशक विशाल नाथ पांडेय, निदेशक डॉ. एके सिंह, निदेशक अटारी डॉ. अंजनी कुमार सिंह, डॉ. मो मोनुबुरुल्लाह, केविके प्रमुख डॉ. अरविंद कुमार सिंह, डॉ. नारायण लाल सहित कई वैज्ञानिक व किसान मौजूद थे।